2024, अंक - 03

त्रिवेणी प्रवाह

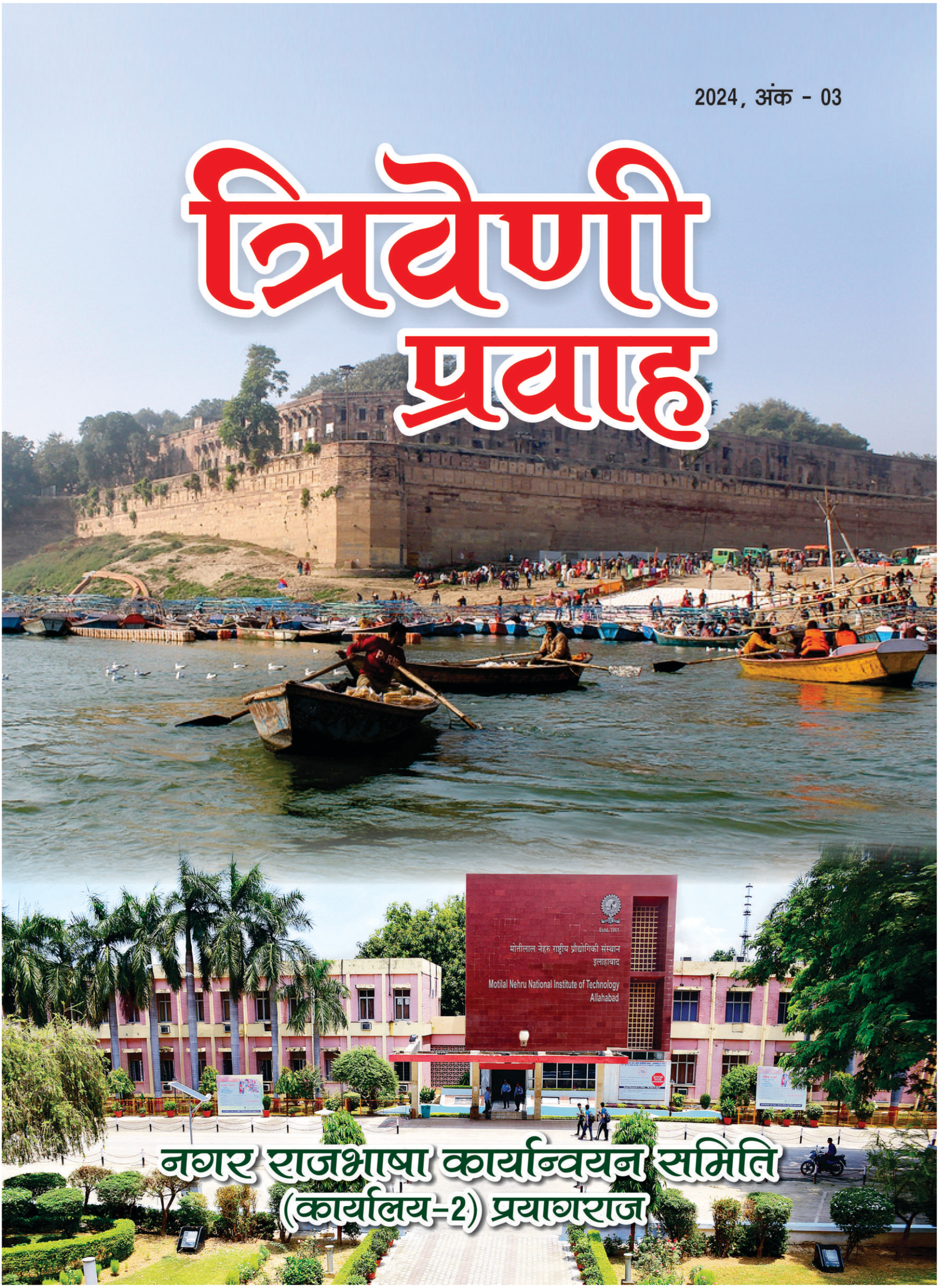

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-2) प्रयागराज

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ सं.
उप निदेशक (कार्यान्वयन), गाजियाबाद का संदेश	02
निदेशक एवं अध्यक्ष महोदय का संदेश	03
कुलसचिव एवं सदस्य सचिव का संदेश	04
सहायक निदेशक (राजभाषा) का संदेश	05
मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान : एक परिचय	6-7
संस्थान स्तर वर्ष 2023-24 : संबंधी कार्यों संक्षिप्त विवरण	8
वार्षिक कार्यक्रम - 2024-25	9-10

क्रं.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	राष्ट्रकुल सजाती-हमारी राजभाषा हिंदी	राजीव कुमार तिवारी	11-12
2.	मातृ-भाषा (कविता)	प्रमोद कुमार द्विवेदी	13
3.	मुक्ति सोपान (कविता)	प्रो. राजीव श्रीवास्तव	13
4.	हिंदी भाषा का वैश्विक विकास	पं. राम नरेश तिवारी	14
5.	'वसुधैव कुटुंबकम्' वैश्विक उन्नति में भारत का योगदान	विकास कुमार सोनी	15-16
6.	अनुलोम-विलोम (एक अद्भुत काव्यग्रन्थ)	श्रीमती मोनिका चौहान	17-19
7.	स्त्री (कविता)	निशा दुबे	20
8.	सभ्यता का ठप्पा	डॉ. सम्पूर्णानंद मिश्र	21
9.	दुनिया में भारत की बढ़ती साख	प्रदोष कुमार	22-23
10.	इक बार फिर से आओ ना (कविता)	प्रेम नारायण उपाध्याय	24
11.	मेरिट में आने के बेहतरीन उपाय	डॉ. अरविन्द कुमार चौधरी	25-26
12.	कैसे तेरा भार उतारूँ ? (कविता)	दुर्गा दत्त पाठक	27
13.	राजभाषा हिंदी की वर्तमान में प्रास्थिति	प्रवीण श्रीवास्तव	28
14.	तकनीकी एवं राजभाषा	हरिओम कुमार	29
15.	नराकास - समीक्षा विवरण - अवधि सहित		30-34
16.	नराकास - सूची - कार्यालयाध्यक्ष के नाम के साथ		35-36

संपादक मंडल

संरक्षक

प्रो. रमा शंकर वर्मा

निदेशक, मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद
एवं अध्यक्ष, नराकास (कार्या-02), प्रयागराज

प्रधान संपादक

डॉ. रमेश पाण्डेय

कुलसचिव, मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद
एवं सदस्य सचिव, नराकास (कार्या-02), प्रयागराज

सम्पादक

श्री प्रमोद कुमार द्विवेदी

सहायक निदेशक (राजभाषा), मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद
मो. नं. 8004945244

संपादक सहायक

श्री राम नरेश तिवारी

केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद

श्री राजीव कुमार तिवारी

प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय ओल्ड कैंट, प्रयागराज
मो. नं. - 88876223431

श्री प्रवीण श्रीवास्तव

हिंदी अधिकारी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद
मो. नं. 7535990036

डॉ. पियुष प्रसाद

क्षेत्रीय निदेशक, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, प्रयागराज
मो. नं. 8638092026

श्री डी. डी. पाठक

प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय इफको फूलपुर, प्रयागराज
मो. नं. 8812033993

श्री उत्तम सिंह

क्षेत्रीय निदेशक, दन्तोपंत ठेगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड प्रयागराज
मो. नं. 9424755779

श्री गोविन्द दुबे

प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय सीआरपीएफ, फाफामऊ
मो. नं. 7839167067

श्री ज्ञानेन्द्र कुमार तिवारी

सहायक कुलसचिव, मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद
मो. नं. 9453020885

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं एवं लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण रचनाकारों के अपने हैं, जिसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग,

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2)

-- X--

302, सी.जी.ओ.भवन-1, कमला नेहरू नगर

गाजियाबाद-201002 दूरभाष/फैक्स-0120-2719356

ई-मेल-ddriogzb-dol@nic.in एवं rionnorthgzb@gmail.com

फा.सं.क्षे.का.का.उ./पत्रिका-संदेश/643 दिनांक - 07/02/2024

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज (कार्यालय-2) संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु निरंतर सराहनीय प्रयास कर रही है। इसी क्रम में नराकास प्रयागराज (कार्यालय-2) अपनी गृह पत्रिका **'त्रिवेणी प्रवाह'** के तृतीय अंक का प्रकाशन करने जा रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि **'त्रिवेणी प्रवाह'** का यह अंक भी संग्रहणीय होने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा। पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों, रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(छबिल कुमार मेहेर)
उप निदेशक (कार्यान्वयन)

मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद
प्रयागराज–211004 (उ0प्र0) भारत
Motilal Nehru National Institute of Technology Allahabad
Prayagraj-211004 (U.P.) India

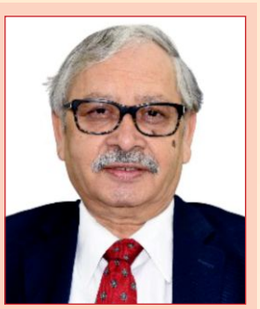

निदेशक
मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद
एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
(02-कार्यालय) प्रयागराज

अध्यक्ष की कलम से ...

नराकास (कार्या.-02) प्रयागराज की गृह पत्रिका **'त्रिवेणी प्रवाह'** के तृतीय अंक के माध्यम से आप सभी को एक बार पुनः संबोधित करते हुए मुझे खुशी हो रही है। त्रिवेणी प्रवाह की यात्रा यह इंगित करती है कि कार्यालय में हिंदी के प्रति रूचि बढ़ रही है। कार्यालय में हिंदी को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने में यह पत्रिका का अनुपम योगदान है। यह हिंदीतर भाषी व्यक्तियों को भी हिंदी भाषा के माध्यम से सरल एवं सहज अभिव्यक्ति हेतु प्रेरित करने के साथ-साथ सम्पूर्ण भारत को एक पटल पर लाने हेतु एकजुट करती है। नराकास (कार्या.-02), प्रयागराज की गृह पत्रिका नराकास के सभी 35 कार्यालयों के कार्मिकों के सृजनशीलता को संपोषित करेन के साथ-साथ राजभाषा के प्रचार-प्रसार में भी सहायक है।

मुझे आशा है कि **'त्रिवेणी प्रवाह'** पत्रिका कार्यालयी कार्यों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

शुभकामनाओं सहित।

(प्रो.रमा शंकर वर्मा)
निदेशक एवं अध्यक्ष

मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद
प्रयागराज–211004 (उ0प्र0) भारत
Motilal Nehru National Institute of Technology Allahabad
Prayagraj-211004 (U.P.) India

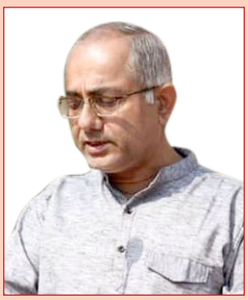

कुलसचिव, मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान
इलाहाबाद,प्रयागराज
एवं सदस्य सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
(कार्यालय-02) प्रयागराज

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

'त्रिवेणी प्रवाह' का तृतीय अंक नराकास कार्या.-02, प्रयागराज के सभी 35 कार्यालयों के कार्मिकों के हिंदी के प्रति प्रेम व उत्साह का परिणाम है। यह अत्यंत गौरव का विषय है कि नराकास कार्या.-02, प्रयागराज की यह गृह पत्रिका सतत प्रकाशित हो रही है। 'त्रिवेणी प्रवाह' का सतत प्रकाशन यह दर्शाता है कि राजभाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति कठिन नहीं, अपितु सरल है। हिंदी जो वैश्विक पटल पर हमारा प्रतिनिधित्व करती है ने केवल पूरे देश की भाषाओं और बोलियों को एक सूत्र में पिरोती है वरन् देश को सुदृढ़ तथा समृद्ध करती है।

'त्रिवेणी प्रवाह' के इस अंक में प्रकाशित रचनाएं सभी कार्यालयों के कार्मिकों के भावों व विचारों का सुंदर चित्रण करती है तथा उनके मनोबल को बढ़ाने के साथ-साथ उन्हें उत्साहित भी करती है। 'त्रिवेणी प्रवाह' का यह अंक पाठकों को अवश्य प्रभावित करेगा। गृह पत्रिका का प्रकाशन एवं कार्मिकों का हिंदी रचनाओं के माध्यम से योगदान कार्यालयी कार्यों में हिंदी का प्रयोग अधिकाधिक करने में सहायक होगा तथा राजभाषा के लक्ष्यों को हासिल करने में मदद करेगा।

'त्रिवेणी प्रवाह' के इस अंक की सफलता के लिए सभी रचनाकारों व संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएं।

रमेश पाण्डेय

(डॉ. रमेश पाण्डेय)
कुलसचिव एवं सदस्य सचिव

मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद
प्रयागराज–211004 (उ0प्र0) भारत
Motilal Nehru National Institute of Technology Allahabad
Prayagraj-211004 (U.P.) India

सहायक निदेशक (राजभाषा)
मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद

सम्पादक की कलम से .....

हिंदी हमारे राष्ट्र की केवल पहचान ही नहीं गौरव भी है जो राष्ट्र स्तर एवं विश्व स्तर पर देश का प्रतिनिधित्व करती है। इसके लिए आवश्यक है कि भारत के सभी लोग अपनी मातृभाषा के साथ-साथ हिंदी को भी अपनी पहचान का माध्यम बनाएं।

केन्द्रीय कार्यालयों में हिंदी पत्रिका का प्रकाशन वहां के कार्मिकों में हिंदी के प्रति संवेदनशीलता के साथ-साथ संवैधानिक दायित्व के प्रति उनकी मनोदशा को भी दर्शाता है। नराकास (कार्या.-02) प्रयागराज की गृह पत्रिका 'त्रिवेणी प्रवाह' के तृतीय अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है तथा यह दर्शाता है कि कार्यालय में हिंदी के प्रति रूचि में वृद्धि हो रही है। यह पत्रिका कार्यालय में हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग करने हेतु कार्मिकों को प्रोत्साहित करेगी।

मैं आशा करता हूँ कार्यालय में भी राजभाषा संबंधी सांविधिक एवं संवैधानिक दायित्वों का निर्वाह करने में कार्यालय के कार्मिक अपना भरपूर योगदान देंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

शुभकामनाओं सहित।

प्रमोद

(प्रमोद कुमार द्विवेदी)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद, प्रयागराज - एक परिचय

प्रासंगिक पृष्ठभूमि -

मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद (पूर्ववर्ती-मोतीलाल नेहरू रीजनल इंजीनियरिंग कॉलेज) की स्थापना 1960 में 17 अन्य क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कॉलेजों के साथ की गई। वर्ष 2000 तक संस्थान इलाहाबाद विश्वविद्यालय से इसके अभियांत्रिकी विभाग के रूप में सम्बद्ध रहा। वर्ष 2002 में इस कॉलेज को मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद नाम दिया गया और इसकी पूरी प्रशासनिक व्यवस्था केन्द्र सरकार के माध्यम से होने लगी। वर्ष 2007 में इस संस्थान को संसद के अधिनियम द्वारा राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया। वर्ष 2020-21 में इस संस्थान ने 60 गौरवशाली वर्ष पूरे किये।

संस्थान की आधारशिला देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा 3 मई 1961 को रखी गयी और कॉलेज भवन का उद्घाटन इस धरती के ओजस्वी सपूत एवं तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री द्वारा 18 अप्रैल 1965 में किया गया।

वर्ष 1961 में 100 छात्रों का पहला बैच तीन बैचलर आफ इंजीनियरिंग (बी.ई.) कार्यक्रमों (सिविल, मैकेनिकल और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग) के लिए शुरू हुआ। मास्टर ऑफ इंजीनियरिंग (एम.ई.) की शुरुआत 1967 में मैकेनिकल इंजीनियरिंग के दो कार्यक्रमों एवं 1971 में सिविल इंजीनियरिंग के तीन कार्यक्रमों से प्रारम्भ की गई। संस्थान के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग को 1973 में एम. ई. के लिए तथा 1975 में पीएच.डी. के लिए एआईसीटीई के गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम केन्द्र के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। वर्ष 1975 में पहली पीएच.डी. मैकेनिकल इंजीनियरिंग में प्रदान की गई। 1976-77 में कम्प्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरिंग और 1982-83 में इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार इंजीनियरिंग तथा उत्पादन एवं औद्योगिकी इंजीनियरिंग तीन बी.ई. कार्यक्रम जोड़े गये। संस्थान में कम्प्यूटर एप्लीकेशन में परास्नातक की शुरुआत 1986 में हुई। संस्थान में 1996 में स्कूल ऑफ मैनेजमेण्ट स्टडीज विभाग की स्थापना हुई जो प्रबंधन में दो-वर्षीय परास्नातक उपाधि (एम.बी.ए.) प्रदान कर रहा है।

इस संस्थान में इंजीनियरिंग के सभी पाठ्यक्रमों, साइन्सेस, मानविकी एवं सोशल साइंसेस और प्रबन्धन में 08 स्नातक (बी.टेक.), 25 परास्नातक (एम.टेक., एम.सी.ए., एम.बी.ए. और एम.एससी.) का सभी पाठ्यक्रमों में डॉक्टोरल कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। 14 शैक्षणिक विभागों/स्कूलों/प्रकोष्ठों में लगभग 4300 स्नातक, 1600 परास्नातक एवं 600 डाक्टोरल छात्र हैं। छात्र भारत के सभी राज्यों से एवं कई दूसरे देशों जैसे - सार्क और मध्य पूर्व एशिया, यूरोप एवं अफ्रीका जैसे अन्य देशों से आते हैं।

संस्थान की बुनियादी सुविधाएं देश के सर्वश्रेष्ठ संस्थानों के स्तर की है। कम्प्यूटर केन्द्र में स्टेट ऑफ आर्ट कम्प्यूटिंग सुविधाएं हैं। विभागों में आधुनिक प्रयोगशालाएं हैं और पुस्तकालय में प्रिंट एवं डिजिटल सुविधाएं उपलब्ध है। अधिकतर शैक्षणिक कक्ष वातानुकूलित होने के साथ ही मल्टीमीडिया शैक्षणिक उपकरणों से सुसज्जित है। छात्रावास, अधिशासी विकास केन्द्र और आवासीय परिसर सहित सम्पूर्ण परिसर 1.25 जीबीपीएस इंटरनेट कनेक्टिविटी से सुसज्जित है।

स्थान - प्रयागराज शहर तीन नदियों, गंगा, यमुना एवं पौराणिक सरस्वती के संगम-स्थल पर अवस्थित है तथा यह शहर अपने शैक्षणिक वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। आर्यों ने पहले यहाँ अपने उपनिवेश स्थापित किए, तब इसे प्रयाग कहा जाता था। कालान्तर में यह ऐश्वर्यवान गुप्तवंश की राजधानी बनी। सन् 1583 में सम्राट अकबर ने संगम के किनारे किला बनवाया, जहाँ 232 ई. पू. निर्मित 11 मीटर ऊँचा अशोक स्तम्भ स्थित है। 20वीं सदी में यह शहर

स्वतंत्रता संग्राम का मुख्य केन्द्र बना। वर्तमान समय में यहां पर कई राष्ट्रीय स्तर के संस्थान विश्वविद्यालय स्थित हैं। संस्थान से प्रयागराज जंक्शन रेलवे स्टेशन से 9 किमी. , प्रयाग रेलवे स्टेशन की दूरी 4 किमी. तथा बमरौली हवाई अड्डा 16 किमी. , की दूरी पर स्थित है।

परिसर - यह संस्थान लखनऊ-प्रयागराज राजमार्ग पर गंगा के किनारे 222 एकड़ के क्षेत्रफल में तेलियरगंज में बसा हुआ है। शैक्षणिक परिसर, छात्रावास परिसर एवं आवासीय परिसर अलग-अलग परिसर में होते हुए भी एक-दूसरे से सुविधानुरूप जुड़े हुए हैं। संस्थान परिसर पूर्ण रूप से हरा-भरा, प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण एवं स्वच्छ वातावरण से युक्त है। परिसर में उच्चतम स्तर के अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए एक शान्त एवं अनुकूल वातावरण विद्यमान रहता है।

प्रशासन - प्रशासनिक संरचना के शीर्ष पर प्रशासकीय परिषद है। निदेशक यहाँ के प्रमुख शैक्षणिक एवं कार्यपालक अधिकारी हैं जोकि संस्थान के समुचित प्रशासन चलाने तथा यहाँ पर निर्देश जारी करने एवं अनुशासन बनाए रखने के लिए उत्तरदायी हैं। दैनिक कार्यों में अधिष्ठातागण, विभागाध्यक्ष, विभिन्न कार्यों हेतु संकाय प्रभारी, कुलसचिव, अन्य अधिकारीगण एवं विभिन्न समितियाँ निदेशक की सहायता करते हैं।

प्रवेश प्रक्रिया - बी.टेक. कार्यक्रमों में जे.ई.ई. (मुख्य परीक्षा) के आधार पर प्रवेश लिया जाता है जबकि एम.टेक. कार्यक्रमों में जी.ए.टी.ई. (गेट) स्कोर के आधार पर, एम.बी.ए. कार्यक्रम में प्रवेश कैट, सी-मैट, मैट, एटीएमए, जीमैट और जैट के स्कोर, ग्रुप डिस्कशन एवं साक्षात्कार के आधार पर तथा एम.सी.ए. कार्यक्रम में प्रवेश एनआईटी एम.सी.ए. कामन इंट्रेन्स टेस्ट (निमसेट) द्वारा लिया जाता है। एम.एस.सी. (जेएएम) के रैंक का आधार पर प्रवेश लिया जाता है साथ ही पी.एच.डी. कार्यक्रम में संस्थान द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा के अंकों एवं इसके बाद साक्षात्कार के आधार पर प्रवेश लिया जाता है।

छात्रावास - यह संस्थान, पूर्णतया आवासीय संस्थान है। वर्तमान में यहाँ बालकों के आठ छात्रावास - स्वामी विवेकानन्द छात्रावास, पुरुषोत्तमदास टण्डन छात्रावास, पं. मदन मोहन मालवीय छात्रावास, बाल गंगाधर तिलक छात्रावास, सरदार वल्लभ भाई पटेल छात्रावास, रवीन्द्र नाथ टैगोर छात्रावास, सर सी.वी. रमन छात्रावास एवं स्नातकोत्तर छात्रावास तथा बालिकाओं के लिए तीन छात्रावास - सरोजनी नायडू महिला छात्रावास, कमला नेहरू महिला छात्रावास एवं डायमंड जुबली छात्रावास है। परिसर में पी.एच.डी. एवं अंतर्राष्ट्रीय स्नातकोत्तर छात्रों के लिए भी अंतर्राष्ट्रीय छात्रावास है। छात्रावास के भोजनालयों का प्रबंधन नामित छात्र प्रतिनिधियों द्वारा मुख्य संरक्षक, बालक छात्रावास एवं बालिका छात्रावास और छात्रावासों के संरक्षकों की एक टीम द्वारा किया जाता है।

छात्र क्रियाकलाप केन्द्र - मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद अपनी शैक्षिक उत्कृष्टता के लिए जाना जाता है। संस्थान में पाठ्यक्रम के साथ-साथ अतिरिक्त पाठ्यचर्चा संबंधी गतिविधियों में भी उपलब्धियां दर्ज हैं। छात्र क्रियाकलाप केन्द्र के अन्तर्गत बहु-उद्देशीय हाल, खेल का मैदान और जिमखाना हैं।

व्यायामशाला - व्यायामशाला छात्रों द्वारा संचालित एक संगठन है, जो कि नेतृत्व कौशल को विकसित करने में योगदान करता है। विभिन्न प्रकार के खेलकूद की सुविधा जिमखाना द्वारा छात्रों को आउट डोर खेल जैसे - शारीरिक खेल-कूद, क्रिकेट, फुटबॉल, वाली-बाल, हॉकी, बास्केटबॉल, लॉन टेनिस, ताइकॉन्डो, कबड्डी, खो-खो, योग /स्केटिंग, कराटे आदि सुविधाएं उपलब्ध करायी जाती हैं। इनडोर खेलों में बैडमिंटन, टेबिल टेनिस, कैरम, शतरंज जैसे खेलों के लिए सम्पूर्ण सुविधाओं का प्रावधान है।

संस्थान स्तर वर्ष 2023-24 के दौरान किए गए राजभाषा संबंधी कार्यों का संक्षिप्त विवरण :-

1. संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रत्येक तिमाही में एक बैठक का आयोजन क्रमशः 20.06.2023, 20.09.2023, 20.12.2023 एवं 20.03.2024 को किया गया तथा समय से उसका कार्यवृत्त जारी करते हुए बैठक में लिए गए निर्णयों पर अनुवर्ती कार्यवाही सुनिश्चित की गई।
2. संस्थान की प्रत्येक तिमाही में समेकित हिन्दी प्रगति रिपोर्ट, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली को भेजी गई तथा समेकित आंकड़े राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के सूचना प्रबंधन प्रणाली पोर्टल पर प्रमाणपत्र सहित अपलोड किए गए।
3. संस्थान में राजभाषा नीति की जानकारी सभी कार्मिकों को प्रदान करने एवं राजभाषा में कार्य के लिए अनुकूल माहौल तैयार करने के उद्देश्य से प्रत्येक तिमाही में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 21.06.2023, 29.09.2023, 06.12.2023 एवं 21.02.2024 को किया गया।
4. संस्थान में हिंदी पखवाड़े का आयोजन दिनांक 14.09.2023 से 03.10.2023 तक किया गया जिसके अन्तर्गत हिंदी काव्य पाठ, हिंदी भाषण प्रतियोगिता, हिंदी निबंध, हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, हिंदी प्रश्नोत्तरी एवं प्रशासनिक शब्दावली, हिंदी टंकण एवं हिंदी सुलेख प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। आयोजित प्रयोगिताओं में कर्मचारी एवं छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया एवं प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को स्मृति चिन्ह एवं प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।
5. संस्थान में प्रशिक्षण कार्यक्रम : टिप्पण, आलेखन, राजभाषा नीति का आयोजन दिनांक 25.09.2023 को पूर्वाह्न 11.00 बजे किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्याख्यान हेतु श्री चन्द्र प्रकाश श्रीवास्तव, सीनियर आडिट आफिसर, कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखा परीक्षा प्रथम प्रयागराज को आमंत्रित किया गया, उन्होंने टिप्पण, आलेखन एवं राजभाषा नीति आदि विषयों पर सार्थक चर्चा की तथा इस संबंध में आने वाली समस्याओं का निवारण भी किया गया। जिसमें संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रतिभाग कर प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफल बनाया।

हिंदी पखवाड़ा-2023 में प्रो. रमा शंकर वर्मा, निदेशक महोदय का उद्बोधन

हिंदी पखवाड़ा 2023 में द्वीप प्रज्जवलित करते हुए

हिन्दी के प्रयोग के लिए वर्ष 2024-25 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को **100%** 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को **100%** 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को **65%** 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **100%** के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को **90%** 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को **90%** 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **90%** के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को **55%** 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को **55%** 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **55%** के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	**100%**	**100%**	**100%**
3.	हिंदी में टिप्पणी	**75%**	**50%**	**30%**
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	**70%**	**60%**	**30%**
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	**80%**	**70%**	**40%**
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	**65%**	**55%**	**30%**
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	**100%**	**100%**	**100%**
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	**100%**	**100%**	**100%**
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुलअनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	**50%**	**50%**	**50%**
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद	**100%**	**100%**	**100%**
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	**100%**	**100%**	**100%**
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।	**100%**	**100%**	**100%**

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 2 बैठकें		
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	**100%**	**100%**	**100%**
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों।	**40%**	**30%**	**20%**
		(न्यूनतम अनुभाग)		
		सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।		

राष्ट्रकुल सजाती-हमारी राजभाषा हिंदी

राजीव कुमार तिवारी, प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय ओल्ड कैंट, प्रयागराज।

हमें गर्व है कि हमारी मातृभाषा हिंदी है, हमारी राजभाषा हिंदी है और विकास के क्रम में दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करता हमारा भारत देश जब शीर्ष को प्राप्त कर लेगा तो राष्ट्रभाषा भी हिंदी ही होगी।

निश्चय ही अपनी जननी 'संस्कृत' की तरह सौम्य, स्पष्ट, अनुशासित किन्तु युगांतर के साथ लगातार माँ गंगा की तरह अपने प्रवाह की यात्रा में सभी के प्रति सुगमता और सहिष्णुता का भाल लिए मेरी मातृभाषा पूरे भारत वर्ष को एक ही राष्ट्रकुल में बांधती हुई सहज भाव के एक हृदय से दूसरे हृदय के मध्य प्रवाहित होती रहती है।

14 सितम्बर की शाम को संविधान सभा मे हुई बहस के समापन के बाद जब संविधान का भाषा संबंधी तत्कालीन भाग 14 क और वर्तमान भाग 17, संविधान का भाग बन गया तब डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने अपने भाषण में बधाई के कुछ शब्द कहे। उन्होंने कहा, ''आज पहली बार ऐसा संविधान बना है जब कि हमने अपने संविधान में एक भाषा रखी है, जो संघ के प्रशासन की भाषा होगी। इस अपूर्व अध्याय का देश के निर्माण पर बहुत प्रभाव पड़ेगा।'' उन्होंने कहा, ''यह मानसिक दशा का भी प्रश्न है जिसका हमारे समस्त जीवन पर प्रभाव पड़ेगा।'' हम केन्द्र में जिस भाषा का प्रयोग करेंगे उससे हम एक-दूसरे के निकटतर आते जाएँगे। आखिर अंग्रेजी से हम निकटतर आए हैं, क्योंकि वह एक भाषा थी। अब उस अंग्रेजी के स्थान पर हमने एक भारतीय भाषा को अपनाया है। इससे अवश्यमेव हमारे संबंध घनिष्ठतर होंगे, विशेषतः इसलिए कि हमारी परम्पराएँ एक ही हैं, हमारी संस्कृति एक ही है और हमारी सभ्यता में बस बातें एक ही हैं। अतएव यदि हम इस सूत्र को स्वीकार नहीं करते तो परिणाम यह होता है कि या तो इस देश में बहुत-सी भाषाओं का प्रयोग होता या वे प्रांत पृथक हो जाते जो बाध्य होकर किसी भाषा विशेष को स्वीकार करना नहीं चाहते थे। हमने यथासंभव बुद्धिमानी का कार्य किया है और मुझे हर्ष है, मुझे प्रसन्नता है और मुझे आशा है कि भावी संतति इसके लिए हमारी सराहना करेगी।''

निश्चय ही एक अद्भुत व्यक्ति के रूप में स्थापित, स्वतंत्र भारत के प्रथम नागरिक ने निज भाषा के जिस स्वरूप की कल्पना की और उसे संविधान द्वारा अंगीकृत होने के बाद, भारतवर्ष के एकीकरण के माध्यम के रूप में देखे जाने का दृष्टिकोण अपने उद्‌बोधन में प्रकट किया वही आज विकसित भारत की नींव रहा। भारत को एक सूत्र में जोड़ने के लिए यह आवश्यक था कि इसकी असंख्य सभ्यताओं और विविध संस्कृतियों को एक सूत्र में जोड़ा जाये।

बिना गो-रसं को रसो भोजनानां।
बिना गो-रसं को रसो भूपतिनाम्।।
बिना गो-रसं को रसो कामिनीनां
बिना गो-रसं को रसो पण्डितानाम्।।

इस श्लोक में गो के चार अर्थ क्रमवार अलग पंक्तियों में गाय, भूमि, इन्द्रिय एवं वाणी है। अर्थात् बिना वाणी में रस हुए कोई विद्वान नहीं सकता और रसयुक्त वाणी के लिए एक सहज भाषा का होना नितांत आवश्यक है। जिस प्रकार किसी भी दो भौतिक वस्तुओं को जोड़ने के लिए एक चिपकाने वाला तरल पदार्थ प्रयुक्त होता है। ताकि वह दोनों वस्तुओं के भीतर प्रविष्ट हो एक बंध बना सके, उसी प्रकार अलग परिवेश में जन्में मनुष्य की संवेदनाओं को परस्पर बाँधने के लिए भाषा का तरल रूप होना चाहिए। यही कारण रहा कि भारत भूमि पर यह दायित्व संवैधानिक रूप से हिंदी को

दिया गया। राष्ट्र के हिमाच्छादित शिखरों से निकल कर बहने वाली जीवन सरिताओं के इस देश को तीन ओर घिरे सागरों में मिलने तक के प्रवाह को बनाये रखने का कार्य निज भाषा को दिया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद में जिस प्रकार हमारी राजभाषा उन्नत से उन्नति की ओर बढ़ती चली गयी, देश भी उसी क्रम में आगे बढ़ता विश्व में शीर्षस्थ स्थान पर स्थापित होता गया।

आज समय की यह आकांक्षा है कि हम अपनी भाषा को अधिक से अधिक विकसित करें, इसमें अधिक से अधिक प्रादेशिक भाषाओं के शब्दों एवं उनके निहित भावों को समावेशित करें जिससे यह भाषा अधिक पुष्ट हो एवं अनन्त पूर्णता की ओर अग्रसर हो। हम यह बेहतर समझते हैं कि कार्य करने की भाषा भी सहज और स्पष्ट होनी चाहिए। राजभाषा के रूप में हिंदी जो प्रभुता प्राप्त की है, यदि अपनी सुविधा के अनुसार हम सब उसे अपने व्यवहार में लाते रहेंगे तो न सिर्फ हम अपनी भाषा को सुदृढ़ करेंगे अपितु स्वयं के व्यक्तित्व को भी निरंतर परिष्कृत कर पाएंगे। यदि हमारे भावों को हम राजभाषा के माध्यम से अभिव्यक्त कर पाने में सक्षम होंगे तो निश्चय ही अपने कार्यस्थल पर भी अपनी जननी के विस्तृत आँचल का सुख हमें मिलेगा।

जय हिंद, जय भारत।

हिंदी पखवाड़ा-2023 में प्रो. रमेश पाण्डेय, कुलसचिव महोदय का उद्बोधन

हिंदी पखवाड़ा में सहायक निदेशक (राजभाषा) महोदय का उद्बोधन

मातृ भाषा

प्रमोद कुमार द्विवेदी,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद

हमारी अभिव्यक्तियों की जन्मदात्री मेरी मातृभाषा।
तुममें जो निजता है सहजता है, और कहीं नहीं।।
तुम्हीं से पाया है हमने धर्म और आध्यात्म,
तुम्ही से पाया है हमने संस्कृति और दर्शन।
तुममें जो उदारता है, महानता है, और कहीं नहीं।।
तुम्हीं से पाया है हमने अभिव्यक्ति का माध्यम,
तुम्हीं से पाया है हमने, विशिष्टता का स्वरूप।
तुममें जो व्यापकता है, जो समृद्धता है, और कहीं नहीं।।
आस्था और विश्वास की प्रतिमूर्ति हो तुम,
कई बोलियों को समेटे 'संगम' का स्वरूप हो तुम।
तुममें जो उदात्तता है जो सरलता है, और कहीं नहीं।।

मुक्ति सोपान

प्रो. राजीव श्रीवास्तव, आचार्य
यांत्रिकी विभाग एवं अधिष्ठाता (छात्र कल्याण)
मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद

हंस चला उड़ते उड़ते मानव पिंजड़े में अटक गया।
मनोकामनाओं और अभिलाषाओं के जंगल में वह उलझ गया।।
एकान्त ठहर कर सोचा तो निज स्वभाव का ज्ञान नहीं।
मैं कौन कहाँ से आया हूँ इसका भी बिल्कुल भान नहीं।।
कर्मों के बन्धन में पड़कर लख चौरासी भटका हूँ।
मानव जीवन पाकर भी अब तक किनारों पर ही अटका हूँ।।
गुरू चरणों की कृपा हुयी तो चिर प्रकाश प्रस्फुटित हुआ।
अन्धकार के इस पिजड़े में नव चेतन अब जागृत हुआ।।
आओ मुक्त हों अब इस वन से नई राह पर निकल पड़ें।
मानव जन्म सफल कर अपनी मुक्ति सोपान की राह बढ़ें।।

हिन्दी भाषा का वैश्विक विकास

पं. रामनरेश तिवारी, पिण्डीवासा
नगर प्रधान, नगर समन्वय समिति,
केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, इलाहाबाद

भाषा विचारों की संवाहिका होती है, दुनिया की संपूर्ण आबादी किसी न किसी भाषा के माध्यम से एक दूसरे से संवाद स्थापित करती है, वैश्विक संदर्भ में यदि हम बात करें तो विश्वभाषा उस भाषा को कहते हैं जिसका प्रयोग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होता है और जिस भाषा को लोग दूसरी भाषा या अतिरिक्त भाषा के रूप में सीखते हैं। सामान्यतः अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भाषा की कल्पना करते समय केवल एक भाषा हमारे मन-मस्तिष्क से उभर कर आती है, और वह है - आंग्ल यानी अंग्रेजी, इसका स्पष्ट कारण यह है कि विश्व के अधिकांश देश गुलामी के जंजीरों में जकड़े रहे और उनके ऊपर न केवल अंग्रेजों की हुकूमत बल्कि उनकी भाषा भी हावी रही, तथापि, ऐसे देश एक-एक कर आजाद होते गए और उन्होंने अपनी अस्मिता स्थापित करने के लिए अपनी भाषा और अपने संस्कारों का सहारा लिया। आज विश्व के सभी विकसित देश इस तथ्य को बड़े ही गर्व के साथ स्वीकार करते हैं कि उन्होंने विकास यात्रा को अपनी भाषा के बल पर पूरी की है।

यह विचारणीय तथ्य है कि हिंदी इस वैश्विक दौड़ में बराबर की हिस्सेदार है। आज संपूर्ण विश्व हिंदी और हिन्दुस्तान के विद्वानों/वैज्ञानिकों एवं इंजीनियरों का लोहा मान रहा है। ऐसे में हिंदी की भूमिका अत्यंत ही महत्वपूर्ण हो गयी है। देश को मिली स्वतंत्रता के बाद भारत में हिंदी ने राजभाषा, राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा के रूप में अपना स्थान बना लिया है साथ ही वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा की बढ़ती लोकप्रियता और उपादेयता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि विश्व भर में हिंदी सीखने वालों की संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई है, गत 8 वर्षों में हिंदी बोलने की मांग में लगभग 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। एक रिपोर्ट के अनुसार केवल अमरीका में हिंदी बोलने वालों में 105 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि अन्य भारतीय भाषाएं, बोलने वालों में 80 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है।

भारत की विकास यात्रा में सहयोग करते हुए अनिवासी भारतीय भी अगली पीढ़ी को हिंदी सिखाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं जिससे वे भारत के साथ अपने संबंधों को और प्रगाढ़ बना सकें। 80 व 90 के दशक में भारत में उदारीकरण, वैश्वीकरण तथा औद्योगीकरण की प्रक्रिया ने तीव्र गति पकड़ी। परिणामस्वरूप अनेक विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में आई। परिणामतः हिंदी के लिए एक खतरा दिखाई देने लगा क्योंकि अंग्रेजी ही उनकी भाषा थी। आज मनोरंजन की दुनिया में भी हिंदी सबसे अधिक मुनाफे की भाषा बन गयी है। कुल विज्ञापनों का लगभग 75 प्रतिशत हिंदी माध्यम को दिया जा रहा है। चाहे वह सेवा क्षेत्र हो या विनिर्माण। यह कोई हिंदी की आवश्यकता नहीं है बल्कि यह बाजार की आवश्यकता है। अंग्रेजों ने अपने औपनिवेशिक काल में संपूर्ण विश्व पर अंग्रेजी के वर्चस्व को कायम किया था।

किन्तु वर्तमान में हिंदी की वैश्विक उपयोगिता को देखते हुए यहां तक कि भारत के राज्यों में हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में अपनी जड़े जमा चुकी है और इसका विस्तार एशिया, खाड़ी के देशों में हुआ है। हिंदी सोसाइटी सिंगापुर द्वारा कुल 7 हिंदी प्रशिक्षण केन्द्र चलाये जा रहे हैं। जिसमें बच्चों से लेकर वयस्कों तक को हिंदी प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। यह संस्था वर्ष 1990 में स्थापित हुई और अब तक कुल 2100 से अधिक विद्यार्थियों को सफल प्रशिक्षण प्रदान कर चुकी है। आस्ट्रेलिया के विक्टोरिया प्रांत की सरकार ने देश की केंद्र सरकार से हिंदी को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में शामिल करने की गुजारिश की है।

हिंदी वस्तुतः आज के सफल बाजार की सशक्त भाषा बनकर उभरी है। यह कहना समीचीन होगा कि हिंदी के बिना न केवल हिन्दुस्तान बल्कि संपूर्ण विश्व अपने बाजार को विस्तार देने में आज असमर्थ महसूस कर रहा है। हिंदी विज्ञापन, विज्ञान, साहित्य, कला और संस्कृति की अद्वितीय भाषा बन गयी है और हिंदी का वैश्विक विकास द्रुत गति से बढ़ता जा रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह दिन दूर नहीं जब हिंदी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन जाएगी।

'वसुधैव कुटुंबकम्'

(वैश्विक उन्नति में भारत का योगदान)

विकास कुमार सोनी, वरिष्ठ सहायक
मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद

'अयं निजः परो वेति गणनालघु चेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्'।।

इसका अर्थ है - यह मेरा है, यह पराया है इस तरह की गणना छोटी सोच रखने वाले करते हैं। उदार चरित्रवालों के लिए तो पूरी पृथ्वी ही परिवार है। **'वसुधैव कुटुंबकम्'** का अर्थ है **'सम्पूर्ण विश्व हमारा एक परिवार है'।** यह श्लोक अभी हाल ही में सम्पन्न जी 20 सम्मेलन में अत्यधिक प्रचलित हुआ था। जहां 19 देशों के राष्ट्राध्यक्षों के बीच एक सम्मेलन का आयोजन भारत की राजधानी नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ।

वसुधैव कुटुंबकम् भारतीय जीवन दर्शन का सार वाक्य है। हर भारतीय इस पर **गर्व** करता है। विश्व बंधुत्व की भावना को प्रगाढ़ करने वाले इस सूत्र वाक्य के मूल तथा **भारतीय दर्शन की गहराई** को दुनिया ने समझ लिया है और इसे बढ़ावा देने की दिशा में कदम उठाए जा रहे हैं। इन प्रयासों ने वसुधैव कुटुंबकम को विश्व भर में तेजी से लोकप्रिय बनाने का काम किया है।

भारतीय संस्कृति में हजारों वर्ष पहले से ही **शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और बंधुत्व** की भावना के महत्व को समझ लिया गया था। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना उसी ओर इंगित करती है, अब इसकी बढ़ती प्रासंगिकता और जरूरत ने भारतीय संस्कृति और साहित्य की ओर भी विश्व का ध्यान आकृष्ट करने का काम किया है। सभी भारतीय विचार पद्धति की दूरदर्शिता से बेहद प्रभावित हैं। वसुधैव कुटुंबकम् का विचार भारतीय दर्शन को **वैश्विक स्तर पर और सशक्त बनाने** का कार्य कर रहा है। समूची दुनिया में वसुधैव कुटुंबकम भारतीयता की पहचान स्थापित कर रहा है। वसुधैव कुटुंबकम का दर्शन पारस्परिक सद्भाव, गरिमा और जवाबदेही को प्रोत्साहित करता है। वसुधैव कुटुंबकम की भावना **स्थिरता, समझ और शांति** को पोषित कर संसार को बेहतर बनाने की क्षमता रखती है। इस अवधारणा को अपनाकर हम सभी के लिए एक बेहतर, अधिक समावेशी और सामंजस्यपूर्ण दुनिया बनाने की दिशा में काम कर सकते हैं।

वैश्विक उन्नति पर भारत का योगदान, आने वाले कुछ वर्षों में और बढ़ेगी, जो विश्व को एक रास्ता दिखाने में सक्षम है, चाहे वह चन्द्रमा की सतह पर पहुंचने वाला **चन्द्रयान-3** हो या **जी-20** देशों की अध्यक्षता के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन हो या वैश्विक महामारी कोरोना हो जिसका हमने डट कर सामना किया और दुनिया भर को **कोरोना के टीके** उपलब्ध कराकर मानवता की एक मिशाल कायम करना आदि अनेकों उदाहरण है जो विश्व को हमेशा अपनी तरफ प्रेरित करती है।

भारत आज वैश्विक स्तर पर अपनी जरूरतों को खुद ही पूरा करने में सक्षम है जिससे आत्मनिर्भर भारत का सपना पूर्ण होने में कोई शंका नहीं है।

भारत शुरू से ही **कृषि प्रधान** देश रहा है आज के वैश्विक स्तर पर तकनीकी के प्रयोग में भी अग्रणी होने के साथ ही **वोकल फॉर लोकल** पर भी ध्यान देने के कारण वैश्विक स्तर पर मार्केटिंग हब के रूप में भी जाना जा रहा है।

जी 20 सम्मेलन के दौरान भारत नवीनीकरण ऊर्जा पर विशेष बल दे रहा है जिससे आने वाले समय में पेट्रोलियम पदार्थो के लिए दूसरे **देशों पर निर्भरता** में भी कमी आ रही है। भारत **ग्लोबल वार्मिंग** जैसी समस्या एवं प्रदूषण को कम कर वैश्विक उन्नति में अपना योगदान दे रहा है।

भारत 5 ट्रीलियन की जी.डी.पी. बन कर अग्रणी राष्ट्र के रूप में विकसित हो रहा है तथा इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत 2025 तक अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा। इससे व्यापार में डालर की भागीदारी भी कम कर रूपया को मजबूत करने में एक बड़ा योगदान रहा है। **भारत स्वच्छता** से लेकर **मेक-इन-इंडिया** प्रोग्राम, **जी.एस.टी.** को शामिल कर एकल टैक्स व्यवस्था एवं उद्योगों के प्रति **उदारीकरण** की नीति द्वारा आज विश्व स्तर पर एक अपनी प्रतिष्ठा कायम कर रहा है।

किसी भी देश की उन्नति उसके देश के नागरिकों से होती है **आजादी के अमृत महोत्सव** के दौरान **घर-घर-तिरंगा** के माध्यम से लोगों के अंदर देशभक्ति की भावना विकसित करके आज विभिन्न स्तर पर नागरिकों की भागीदारी के कारण ही भारत वैश्विक स्तर पर योगदान दे रहा है।

अंत में इस बात पर कोई शंका नही कि **भारत 2047** अर्थात् अपनी आजादी के **100 वर्ष में एक विकसित देश** के रूप में विश्व को प्रकाशित करेगा जिससे - **शांति को बढ़ावा, विविधता के प्रति सम्मान को प्रोत्साहन, वैश्विक जिम्मेदारी को बढ़ावा और स्थिरता को समर्थन मिलेगा।**

हिंदी पखवाड़ा 2023 में धन्यवाद प्रस्ताव

हिंदी पखवाड़ा 2023 में समापन समारोह

अनुलोम-विलोम (एक अद्भुत काव्यग्रन्थ)

श्रीमती मोनिका चौहान, कनिष्ठ अनुवादक
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज

हमारे भारत में अनेक काव्यग्रन्थ लिखे गए हैं जो संस्कृत, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में है। भारत के महाकाव्यों में वाल्मीकि रचित रामायण, तुलसीदास रचित रामचरितमानस, वेद व्यास द्वारा रचित महाभारत आदि ग्रन्थ प्रमुख हैं। कुछ अन्य ग्रन्थ भी है जैसे - बुद्धचरित, कुमारसंभव, रघुवंश, किरातार्जुनीयम्, शिशुपाल वध, नैषधीय चरित इत्यादि।

आपने श्रीराम पर लिखे गए कई काव्य ग्रन्थ पढ़े होंगे। श्री कृष्ण पर लिखे गए काव्य ग्रन्थ भी पढ़े होंगे, लेकिन क्या आपने किसी ऐसे महाकाव्य के बारे में सुना है जिसमें श्री राम और श्री कृष्ण दोनों के बारे में लिखा हो। आपको लग रहा होगा इसमें कौन सी बड़ी बात है। बहुत सी किताबों में श्री राम और श्री कृष्ण दोनों के बारे में साथ में ही लिखा होता है। आज हम आपको ऐसे काव्यग्रन्थ के बारे में बताने जा रहे हैं जिसमें सम्मिलित किसी भी श्लोक को सीधा पढ़े तो वह श्री राम की रामायण कथा है और यदि श्लोक को विपरित पढ़ा जाए तो उसमें श्री कृष्ण भागवत कथा है।

राघव-यादवीयम् नाम का एक ऐसा ग्रन्थ है जिसके श्लोकों को सीधा पढ़ते जाए तो रामकथा बनती है और यदि उसी श्लोक के शब्दों को उल्टा करके पढ़े तो वह कृष्णकथा बनती है। राघव-यादवीयम् पुस्तक के नाम से भी यह प्रदर्शित होता है, राघव अर्थात् राम + यादव अर्थात् कृष्ण के चरित को बताने वाली गाथा है राघवयादवीयम्। इसे अनुलोम-विलोम काव्य भी कहा जाता है।

इस अद्भुत ग्रन्थ की रचना 17वीं शताब्दी के कवि श्री वेंकटाध्वरि ने की थी। इनका जन्म दक्षिण भारत के कांचीपुरम के एक गाँव अरसनीपलै में हुआ था। श्री वेदांत देशिक वेंकटाध्वरि के गुरु थे, जिनसे इन्होंने शास्त्रों की शिक्षा ग्रहण की। वेंकटाध्वरि बचपन में दृष्टिदोष से बाधित हो गए थे इसके बावजूद वे मेधावी और कुशाग्र बुद्धि के धनी थे। इन्होंने गुरु के सानिध्य में रहकर तथा उनके अनुयायी बनकर काव्यशास्त्र में प्रवीणता हासिल की और 14 ग्रन्थों की रचना की। उनके सभी ग्रंथों में ''लक्ष्मीसहस्त्रम'' उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण है। ऐसा कहते है कि ''लक्ष्मीसहस्त्रम'' ग्रन्थ की रचना पूर्ण होते ही उनकी दृष्टि उन्हें वापस प्राप्त हो गई थी। इनकी कुल 14 रचनाओं में से ''राघवयादवीयम्'' सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं।

''राघवयादवीयम्'' ग्रन्थ में केवल 30 श्लोक हैं किंतु सीधा और उल्टा दोनों ही तरह से श्लोक अर्थवान है, अतः ऐसा माना जा सकता है कि इसमें 60 श्लोक हैं।

आइये इस ग्रन्थ के कुछ श्लोकों को पढ़ते है और समझते हैं कि ऊपर जो भी कुछ लिखा है क्या वो सच है -

(श्लोक - 1)

अनुलोम श्लोक - वंदेऽहं देवं तं श्रीतं रन्तारं कालं भासा यः।
वमो रामाधीराप्यागो लीलामारायोध्ये वासे।।

अर्थ - मैं उन भगवान श्रीराम के चरणों में प्रणाम करता हूँ जिनके हृदय में सीताजी रहती हैं और जिन्होंने अपनी पत्नी सीता के लिए सह्याद्रि की पहाड़ियों से होते हुए लंका जाकर रावण का वध किया तथा वनवास पूरा कर अयोध्या वापस लौटें।

विलोम श्लोक - सेवाध्येयो रामालाली गोप्याराधी भारामोराः।

यस्साभालंकारं तारं तं श्रीतं वन्देऽहं देवम्।।

अर्थ - मैं रुक्मिणी तथा गोपियों के पूज्य भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में प्रणाम करता हूँ, जो सदा ही माँ लक्ष्मी के साथ विराजमान हैं और जिनकी शोभा समस्त रत्नों की शोभा को हर लेती है।

(श्लोक - 2)

अनुलोम श्लोक - साकेताख्या ज्यायामासीत् या विप्रादीप्ता आर्याधारा।

पूः आजीत अदेवाद्याविश्वासा अग्र्या सावाशारावा।।

अर्थ - पृथ्वी पर साकेत अर्थात् अयोध्या नामक एक शहर था, जो वेदों में निपुण, ब्राह्मणों तथा वणिकों के लिए प्रसिद्ध था एवं अजा के पुत्र दशरथ का धाम था, जहाँ होने वाले यज्ञों में अर्पण को स्वीकार करने के लिए देवता भी सदा आतुर रहते थे और यह विश्व के सर्वोत्तम शहरों में एक था।

विलोम श्लोक - वाराशावासाग्र्या साश्वविद्यावादेताजीरा पूः।

राधार्यप्ता दीप्रा विद्यासीमा या ज्याख्याता के सा।।

अर्थ - समुद्र के मध्य में अवस्थित, विश्व के स्मरणीय शहरों में एक द्वारका शहर था जहाँ अनगिनत हाथी-घोड़े थे, जो अनेकों विद्वानों के वाद-विवाद की प्रतियोगिता स्थली थी, जहाँ राधास्वामी श्रीकृष्ण का निवास था एवं जो आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसिद्ध केंद्र था।

(श्लोक - 3)

अनुलोम श्लोक - कामभारस्स्थलसारश्रीसौधा असौ घन्वापिका।

सारसारवपीना सरागाकारसुभूररिभूः।।

अर्थ - सर्वकामनापूरक भवन, बहुत वैभवशाली धनिकों का निवास, सारस पक्षियों के कूँ-कूँ से गुंजायमान गहरे कुओं से भरा यह स्वर्णिम शहर अयोध्या था।

विलोम श्लोक - भूरिभूसुरकागारासना पीवरसारसा।

का अपि व अनघसौध असौ श्रीरसालस्थभामका।।

अर्थ - मकानों में निर्मित पूजा वेदी के चंहुओर ब्राह्मणों का जमावड़ा इस बड़े कमलों वाले नगर, द्वारका में है। निर्मल भवनों वाले इस नगर में ऊंचे आम्रवृक्षों के ऊपर सूर्य की छटा निखर रही है।

(श्लोक - 4)

अनुलोम श्लोक - रामधाम समानेनम् आगोरोधनम् आस ताम्।

ज्ञामहाम् अक्षररसं ताारभाः तु न वेद या।।

अर्थ - राम की अलौकिक आभा, जो सूर्यतुल्य है, जिससे समस्त पापों का नाश होता है से पूरा नगर प्रकाशित था। उत्सवों में कमी न रखने वाला यह नगर, अनन्त सुखों का श्रोत और तारों की आभा से अनभिज्ञ था (ऊंचे भवन व वृक्षों के कारण)।

विलोम श्लोक - यादवेनः तु भाराता संररक्ष महामनाः।

तां सः मानधरः गोमान् अनेमासमधामराः।।

अर्थ - यादवों के सूर्य, सब को प्रकाश देने वाले, विनम्र, दयालु, गायों के स्वामी, अतुल्य शक्तिशाली श्रीकृष्ण द्वारा द्वारका की रक्षा भलीभांति की जाती थी।

(श्लोक - 5)

अनुलोम श्लोक - यन् गाधेयः योगी रागी वैताने सौम्ये सौख्ये असौ।
तं ख्यातं शीतं स्फीतं भीमान् आम अश्रीहाता त्रातम्।।

अर्थ - गांधीपुत्र गाधेय, यानी ऋषि विश्वामित्र, एक निर्विघ्न, सुखी एवं आनंददायक यज्ञ करने को इक्षुक थे पर असुरी शक्तियों से आक्रान्त थे। उन्होंने शान्त, शीतल एवं गरिमामय त्राता श्रीराम का संरक्षण प्राप्त किया था।

विलोम श्लोक - तं त्राता हा श्रीमान् आम अभीतं स्फीतं शीतं ख्यातं।
सौख्ये सौम्ये असौ नेता वै गीरागी यः योधे गायन।।

अर्थ - नारद मुनि जो दैदीप्यमान, अपनी संगीत से योद्धाओं में शक्ति संचारक, त्राता, सद्गुणों से भरपूर, एवं ब्राह्मणों के नेतृत्वकर्ता के रूप में विख्यात हैं, जिनकी ख्याति में दयावान, शांत एवं परोपकारी के रूप में दिनोंदिन वृद्धि हो रही थी, ने विश्व के कल्याण के लिए गायन करते हुए श्रीकृष्ण से याचना की।

अन्य 25 श्लोक भी इसी प्रकार है जो अनुलोम एवं विलोम दोनों ही तरह से अर्थवान है। 'राघवयादवीयम्' ग्रन्थ हमारे सनातन धर्म का एक ऐसा अति दुर्लभ ग्रंथ है जिसे विश्व के सात आश्चर्यों में से एक माना जाना चाहिए।

एक दिवसीय हिंदी कार्याशाला

हिंदी पखवाड़ा-2023

स्त्री

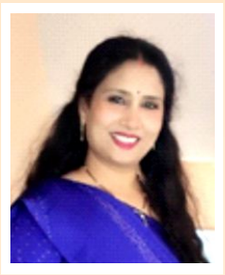

निशा दुबे, वरिष्ठ सहायक
भारतीय सूचना प्रद्यौगिकी संस्थान इलाहाबाद

सिंदूर लगा के सोच जकड़ दी
मंगलसूत्र पहना के आवाज रोक दी
चूड़िया पहना के हाँथ बांध दिए
पायल पहना बेड़िया डाल दी
वाह रे स्त्री तू सिंगार के नाम पर फिर ठग ली गयी,
तुम्हारा सारा घर है मालकिन तुम ही हो
और उसी घर के नेम प्लेट पर तेरा कही नाम नहीं
वाह रे स्त्री तू जागीर के नाम पर फिर ठग ली गयी,
तेरे लिए ही सब कोई नहीं पराया, माता पिता
भाई बहन यहां आके तूने पाया,
फिर भी तपते सर पर तेरे हाथ न धरा कोई
वाह रे स्त्री तू रिश्तो के नाम पर फिर ठग ली गयी,
कितने दिन हो गए गोद नहीं भरी तेरी,
क्यों अभी ऐसा है क्या कमी तुझमे है कोई
लगा दिया तुझमे बाँझपन का ठप्पा
वाह रे स्त्री तू सम्पूर्णता के नाम पर फिर ठग ली गयी,
जन्म दिया नया जीवन पाल पोष बड़ा किया
पिता का सर नेम मिला बेटे का पुत्र कहा गया,
वाह रे स्त्री तू ममता के नाम पर फिर ठग ली गयी
थमा के रसोई घर तुझे कहा हाथों में तेरे स्वाद है
जब तक तू न बनाती भरता कहा सबका पेट है
और ऐसे ही तूने पूरी जिंदगी रसोई में निकाल दी
वाह रे स्त्री तू अन्नपूर्णा के नाम पर फिर ठग ली गयी
ऐसे ठगहारो से भरी है दुनिया, फिर भी तेरी एक पहचान है
बहती आंखों को ढक ममता का आँचल ओढ़ होठो पर मुस्कान है,
तेरे कदमों में है ज़न्नत औरत तू खुद में बेमिसाल है
डर न, झुक न, तेरे कदमों में ही जहांन है
लुटा दे प्यार अपना दे दे सारा प्यार तू
तू लक्ष्मी तू दुर्गा तू ही मायावान है
हां स्त्री तू ही तो धरती तू ही आसमान है।।
सभी नारी जगत् को समर्पित

सभ्यता का ठप्पा

डॉ. सम्पूर्णानंद मिश्र
स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी
केन्द्रीय विद्यालय नैनी प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

समाज के कुछ सभ्य लोगों ने
हमारी पीठ पर
सभ्यता का ठप्पा लगा दिया है
क्योंकि
हम कांक्रीट के जंगल उगाने लगे
पेड़ पौधों को काटने लगे
आज का मनुष्य
भीतर से वैसे सभ्य है
क्योंकि
भीतर की सभ्यता
के नंगेपन से या तो वह परिचित है
या उसकी अपनी छाया
जो कभी-कभी उसे
उसके नंगेपन को
अपने दर्पण में
दिखाने का प्रयास करती है
वैसे
भीतर उग आए अनावश्यक जंगल को हम लोगों ने
अपनी वासना का खाद देकर
सिर्फ़ उसे बढ़ाने का ही काम किया है
काटने का नहीं
जिस दिन
हम लोग अपने भीतर के जंगल को काट देंगे
उस दिन हमें
अपनी पीठ पर अपने सभ्य होने का ठप्पा लगवाने की आवश्यकता
नहीं होगी!

दुनिया में भारत की बढ़ती साख़

प्रदोष कुमार
उच्च श्रेणी लिपिक
हरीशचन्द्र अनुसंधान संस्थान, झूँसी-प्रयागराज

आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में भारत ने अपना लोहा मनवा लिया है। वैश्विक परिवेश में जहाँ दुनिया के कई देशों की मुद्राओं का अवमूल्यन हो रहा है, वहीं भारत की मुद्राओं की साख बढ़ रही है।

पिछले दो दशक की बात करें तो भारत ने अपनी पहचान एक ऐसे देश के रूप में बनायी है जो न केवल आत्मनिर्भर है - बल्कि इसने दूसरे देशों की आपदाओं में भी सहायता के हाथ आगे बढ़ाये हैं। ऐसे देश हमारे देश के ऋणी हैं। इस प्रकार, भारत दुनिया में फैली या फैलाई जाने वाली आपदाओं में अवसर की तलाश करता है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण कोरोना काल में भारत की तत्परता, दृढ़निश्चतता एवं संकल्प से ओतप्रोत वाले भाव दृष्टिगोचर होते हैं।

कोरोना काल को विश्व ने वैश्विक महामारी का नाम दिया। विकसित से विकासशील देश इसके दुष्प्रभाव से खाने-पीने को मोहताज हो गये। आर्थिक व्यवस्था भी चरमरा सी गयी। विश्व 'कोरोना की वैक्सीन' दुनिया के लिए एक पहेली बन गयी, किन्तु भारत ने इसे अवसर के रूप में स्वीकार किया। इसने न केवल अपने लिए वैक्सीन तैयार की बल्कि कई अन्य देशों को मुफ्त में वैक्सीन प्रदान की साथ ही मुफ्त में दवाईयाँ भी भिजवाई।

आज कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं, जो चन्द्रमा पर जाने की लालसा न रखता हो। इस ओर हमने न केवल चन्द्रमा पर कदम रखा, बल्कि हमने यह पता लगाने की कोशिश की कि हमारे दैनिक जीवन की आवश्यक आवश्यकताओं हेतु वहाँ पर क्या हैं। पहले की यह कहावत- ''चंदा मामा दूर के'' अब दूर के नहीं - वरन 'टूर के' रह गया है। ऐसा हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री - 'श्री नरेन्द्र मोदी' जी ने भी कहा।

भारत ने महिलाओं को भी इस बदलते परिवेश में बराबर का भागीदार बनाया। दुनिया में फाइटर प्लेन उड़ाने में जहाँ अवनी चतुर्वेदी जैसी योद्धा को तैयार किया वहीं कल्पना चावला जैसी अंतरिक्ष यात्री, साक्षी मलिक जैसी पहलवान, पी सिंधु जैसी प्रतिभावान बैडमिंटन खिलाड़ी तैयार किया। जोश व ओतप्रोत से लवरेज हमारी भी सभी महिला खिलाड़ी आज बिना मेडल के किसी भी विश्व स्तरीय खेलकूद के मंच से वापस आना अपनी भारत की मिट्टी का अपमान समझती है और वे इस में सफल भी होती है।

आज हम, भारत द्वारा जी-20 की मेजबानी किये जाने की बात करें, तो यह कहना गलत नहीं होगा कि भारत ने इसे सफलतापूर्वक आयोजित कर विश्व के सामने अपनी विशालता की एक लकीर खींच दी है। भारत ने बहुत कम समय में 'भारतमंडपम' को तैयार कर इसमें 'जी-20' को सफलतापूर्वक आयोजित किया। ऐसे कई कारनामें भारत ने किये हैं जिसने विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया है नई संसद को तैयार करना, उसे क्रियान्वित करना, इसे ऐतिहासिक धरोहर से सुसज्जित कर, स्वर्णिम रंग की चकाचौंध से संसार को मंत्रमुग्ध कर दिया है। इस बाबत, यह कहना सही होगा कि हमारा पड़ोसी देश 'पाकिस्तान' भी हमारे गुणगान किये नहीं थक रहा है।

भारत ने यह बता व जता दिया है कि - 'हम बदलेंगे, युग बदलेगा।' भारत ने स्वदेशी तकनीक अपनाकर कई ऐसे कारनामे किये हैं, जिसने विश्व को अचम्भे में डाल रखा है। स्वदेशी हेलीकॉप्टर, स्वदेशी राइफल, स्वदेशी मोबाइल एवं कई ऐसी खोज हैं जिसमें भारत ने विश्व को अपने यहाँ पूँजी विनिवेश करने में जरा भी देर नहीं लगायी है। आज

विदेशी विनियोग हर क्षेत्र में पैसे लगाना चाहता है। इससे हमारे यहाँ न केवल रोजगार को बढ़ावा मिलेगा बल्कि हमारी राष्ट्रीय आय में भी वृद्धि होगी।

कभी अमेरिका पूरे विश्व में राज करता था इंग्लैंड के हम उपनिवेश बने हुए थे। इसने हमारे देश में सैकड़ों वर्षों तक राज किया था। किन्तु आज अमेरिका के राष्ट्रपति व इंग्लैंड के प्रधानमंत्री हमारे देश के मुरीद बने हुए हैं। माननीय प्रधानमंत्री की प्रखर बुद्धिमता के सभी कायल बने हुए हैं। परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में हमसे कोई मुकाबला नहीं कर सकता। पेट्रोल, डीजल व प्राकृतिक गैस पर निर्भरता कम करते हुए हमने बायो गैस व अन्य कृत्रिम ईंधन जैसे 'इथेनॉल' की खोज कर ली है। भारत ने दुनिया का पथ प्रदर्शक बन कर यह बताना शुरू कर दिया है कि हम किसी से कम नहीं है। हम अग्रगण्य भूमिका में खड़े हुए हैं। **'वसुधैवकमकुटुम्ब'** हमारे पर्याय हैं। हम पड़ोसियों के साथ भी अच्छे संबंध रखना चाहते हैं। हम इसी प्रकार आगे बढ़ते रहेंगे और जो सामने आयेगा उसे आदर की भावना के साथ सर्वकल्याण सत्कार का पाठ पढ़ाते रहेंगे।

भारत की बढ़ती साख के कारण दुनिया इसकी दीवानी है। हम अपनी निर्बलता को ढ़ाल बनाकर, प्रतिद्वंदियों को परास्त कर अपना तिरंगा चन्द्रमा से सूर्य तक लहरायेंगे और अपनी साख मजबूत करेंगे।

दिनांक 26-09-2023 को नराकास प्रयागराज (का.-02) की बैठक

दिनांक 29-09-2023 को नराकास प्रयागराज (का.-02) की बैठक

एक बार फिर से आओ ना

प्रेम नारायण
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक संस्कृत
केंद्रीय विद्यालय ओल्ड कैंट, प्रयागराज

कहां छिपे हो कृष्ण कन्हैया
अरे मुरली वाले कृष्ण कन्हैया,
इक बार फिर से आओ ना।
नंद-यशोदा बिलख रहे हैं,
दौड़ गले लग जाओ ना।
कहां छिपे हो कृष्ण कन्हैया
अरे मुरली वाले कृष्ण कन्हैया
इक बार फिर से आओ ना।।
कहां छिपे हो कृष्ण कन्हैया
अरे मुरली वाले कृष्ण कन्हैया
माता यशोदा माखन मथे है,
फिर से चुराकर खाओ ना।
कहां छिपे हो कृष्ण कन्हैया
अरे मुरली वाले कृष्ण कन्हैया
इक बार फिर से आओ ना
मिल ग्वालों संग वन में जाकर
फिर से गाय चराओ ना।
कहां छिपे हो कृष्ण कन्हैया
अरे मुरली वाले कृष्ण कन्हैया
इक बार फिर से आओ ना
मधुवन में गउएं रम्भा रही हैं
मुरली की तान सुनाओ ना
कहां छिपे हो कृष्ण कन्हैया
अरे मुरली वाले कृष्ण कन्हैया
इक बार फिर से आओ ना
पनघट जाती गोपियां सारी
मटकी फोड़ खिझाओ ना
कहां छिपे हो कृष्ण कन्हैया
अरे मुरली वाले कृष्ण कन्हैया
इक बार फिर से आओ ना।।
कहां छिपे हो कृष्ण कन्हैया
अरे मुरली वाले कृष्ण कन्हैया
इक बार फिर से आओ ना।।
कंस बहुतेरे घूम रहे हैं
उनका वध कर जाओ ना
कहां छिपे हो कृष्ण कन्हैया
अरे मुरली वाले कृष्ण कन्हैया
इक बार फिर से आओ ना।।
युवजन अब ताक भए बैरागी
फिर से रास रचाओ ना।।
कहां छिपे हो कृष्ण कन्हैया
अरे मुरली वाले कृष्ण कन्हैया
इक बार फिर से आओ ना
विप्र सुदामा द्वार खड़े हैं
आकर गले लगाओ ना
कहां छिपे हो कृष्ण कन्हैया
अरे मुरली वाले कृष्ण कन्हैया
इक बार फिर से आओ ना
भटक रही राजनीति संवारो
कोई विदुर फिर लाओ ना।।
कहां छिपे हो कृष्ण कन्हैया
अरे मुरली वाले कृष्ण कन्हैया
इक बार फिर से आओ ना
शिशुपाल अनेकों घूम रहे है
सुदर्शन चक्र चलाओ ना
कहां छिपे हो कृष्ण कन्हैया
अरे मुरली वाले कृष्ण कन्हैया
इक बार फिर से आओ ना।।
चीर हरण हर जगह हो रहा
द्रौपदियों की लाज बचाओ ना।।
कहां छिपे हो कृष्ण कन्हैया
अरे मुरली वाले कृष्ण कन्हैया
इक बार फिर से आओ ना।।

मेरिट में आगे के बेहतरीन उपाय

डॉ. अरविन्द कुमार चौधरी, हिंदी प्रवक्ता
जवाहर नवोदय विद्यालय, मेजा खास, प्रयागराज

हम सभी जीवन में सफल होना चाहते हैं। सफलता प्राप्ति के लिए विविध प्रकार के कार्य करते हैं। हम वही बनते हैं जो हम सोचते हैं। आज तक कोई आदमी अपनी सोच की सीमा से आगे नहीं बढ़ पाया है। हम देवी देवताओं की पूजा प्रार्थना करते रहते हैं, परन्तु वास्तव में हम अपने कर्मों से ही आगे बढ़ते हैं। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि हम अपने आप को ही गिफ्ट देते हैं। कोई भी देवी देवता हमें उपहार देने नहीं आता। हम अपने भगवान खुद ही हैं। अतः अपने भाग्य का निर्माण हमें ही करना है। जब तक ये बात हम आत्मसात नहीं कर पायेंगे तब तक हम वास्तविक उन्नति नहीं कर पाएंगे। श्रीरामचरितमानस में लक्ष्मण की कही गयी ये बात सत्य है कि - कायर मन कर एक अधारा, दैव-दैव आलसी पुकारा। (तुलसीदास - श्रीरामचरितमानस-सुंदरकाण्ड) अतः काम करने का और पढ़ने का उचित माहौल तैयार कर जुट जाएँ।

सर्वप्रथम अपने लक्ष्य को निश्चित करें। लक्ष्य कई प्रकार के हो सकते हैं। प्रथम दीर्घकालीन लक्ष्य, द्वितीय मध्यकालीन लक्ष्य, तृतीय अल्पकालीन लक्ष्य। सबसे पहले उन लक्ष्यों को निर्धारित करें जो आप अपने जीवन में पाना चाहते हैं। दूसरे शब्दों में आप जैसा जीवन जीते हैं उसका चुनाव आप खुद करते हैं। इस तथ्य को आप सोचें या न सोचें। जो लोग बिना सोचे काम करते हैं कि अपने जीवन से क्या पाना चाहते हैं। उनका जीवन तात्कालिक घटनाओं, और आवश्यकतापूर्ति बन कर रह जाता है। सामान्य स्थित से ऊँचा उठने वाले लोगों ने पहले ही अपने आगे बढ़ने के विषय में सोच लिया था। मध्यम लक्ष्य वे है जिन्हें हम आगामी वर्षों में पाना चाहते हैं। अल्पकालीन लक्ष्य प्रतिदिन और सप्ताह से सम्बंधित होते हैं। इन्हें हम प्रतिदिन के हिसाब से निर्धारित करते हैं। प्रति-दिन इसका आकलन भी होना चाहिए। आकलन के अनुसार प्रतिदिन सुधार भी होना चाहिए। उसमें युगानुरूप नये सुधार भी होने चाहिए।

आपने लक्ष्य बना लिया। पढ़ाई प्रारम्भ कर दी। अपने लक्ष्य पर धीरज के साथ लगे रहिये। कबीर वाणी को याद रखिये -

धीरे - धीरे रे मना, धीरे - धीरे होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आये फल होय।।

अध्ययन की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि आपने अपने पाठ्यक्रम को कितना समझा है। पाठ्यक्रम का अध्ययन करें और विश्लेषण भी करें। पिछले वर्ष के प्रश्नपत्रों के अध्ययन से आपको तैयारी की दिशा पता चल जाएगी।

पाठ्यक्रम के अनुसार टाइम टेबल अवश्य बनाएं। टाइम टेबल बनाकर पढ़ने से हर विषय की तैयारी हो जाती है। संतुलित अध्ययन का सबसे बड़ा उपाय यही है। टाइम टेबल में मनोरंजन व तात्कालिक महत्व के कार्यक्रमों का भी ध्यान रखें। जिससे आप तनाव रहित होकर जी सकें।

योग, ध्यान और जप के प्रयोग से मानसिक स्थिरता की प्राप्ति होती है। जो स्वस्थ जीवन हेतु अति आवश्यक है। हर सफलता अच्छे स्वास्थ्य की बलि देकर नहीं होनी चाहिए। योग और ध्यान हमे आंतरिक मजबूती प्रदान करते हैं। लड़ाई के मैदान में जाने के पूर्व सेना वर्षों तक अभ्यास करती है। एक पहलवान कुश्ती लड़ने के पहले बहुत दिनों तक अभ्यास करता है। इसी तरह परीक्षा के पूर्व एक परीक्षार्थी को भी लिखने का जबरदस्त अभ्यास होना चाहिए। गणित और विज्ञान के विद्यार्थी को सवालों के हल करने का अभ्यास होना चाहिये। सीबीएसई और यू0पी0 बोर्ड के विद्यार्थियों को तीन घंटे तक लिखने का कार्य करना पड़ता है। इस कार्य की सफलता हेतु प्रतिदिन नोट्स बनाना और प्रश्नों को हल करने का प्रैक्टिस करना चाहिए। लिखने से याद करने में भी मदद मिलती है। परीक्षा के समय नोट्स से त्वरित रिवीजन हो जाता है। अभ्यास की निरन्तरता और नियमितता ही सफलता का मूलमंत्र है। पढ़ने का समय व स्थान निश्चित करना भी उत्तम माना गया है।

अच्छे साथियों का चुनाव भी सफलता और अच्छे अंक प्राप्ति का एक सोपान है। प्रसिद्ध विचारक गेटे का कथन

है कि आप अपने साथियों से ही पहचाने जाते हैं। आपके मित्र आपकी मनोभूमि का भी निर्धारण करते हैं। एक कहावत को याद रखें जो जैसा साथ करता है वैसे ही बन जाता है। इसके साथ ही मेहनत में विश्वास रखें। ध्यान रखें आगे बढ़ने में प्रतिभा की अपेक्षा मेहनत और लगन का अधिक योगदान होता है।

दोहराना या पुनरावृत्ति एक अति आवश्यक क्रिया है। इसके बिना अच्छे अंक की कल्पना करना भी कठिन है। पुनरावृत्ति के माध्यम से हमारी स्मृति में वृद्धि होती है। माइंड पावर स्टडी टेकनीक के लेखक श्री राज बापना रिवीजन को याददास्त बूस्टर के रूप में मानते हैं। उनके अनुसार अध्ययन किये गये विषय को उसी दिन, सप्ताह के अंदर पुनः और माह के अंत में करने से अध्ययन का विषय याद हो जाता है। लम्बे समय तक याद रखने हेतु बार-बार की पुनरावृत्ति अति आवश्यक है। इस सन्दर्भ में इस वाक्य को याद रखे -

करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर पड़त निशान।।

अर्थात् बार-बार अभ्यास से मूर्ख भी विद्वान हो जाते हैं।

शुद्ध लेखन जिसमें वर्तनी की स्पष्टता और दर्शनीयता पर विशेष ध्यान देना चाहिए। लेखन में गति और शुद्धता का मेल होना चाहिए।

फाइनल परीक्षा के पूर्व अपना परीक्षण अवश्य करें। इससे अपनी कमियों का पता चलेगा। आप अपनी कमियों में सुधार कर पाएंगे। आत्म विश्वास बढ़ाने हेतु पूर्व परीक्षा का महत्व अत्यधिक होता है। फाइनल परीक्षा के पूर्व कई बार खुद पेपर हल करें। आपको एक बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए कि सफलता सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ने का नाम है। अतः अपने आप में सतत और उत्तरोत्तर सुधार करते रहें।

परीक्षा के पूर्व रात्रि में भरपूर नींद आवश्यक है। इससे स्मृति अच्छी रहती है। परीक्षा के समय आलस्य नहीं रहता है। तनाव दूर होकर मन एकाग्र रहता है।

जीवन में सफलता प्राप्ति की राह में कठिनाइयों का आना स्वाभाविक है। मान कर चलिए यह भी सफलता का एक अंग है। प्रारम्भ में ही कठिनाइयों से डरना ठीक नहीं है। हीरा तभी बनता है जब कोयला खूब ताप और दाब का सहन करता है। उसी तरह हम आप भी कठिनाइयों को झेल कर ही अच्छे बनते हैं।

'मेरिट में कैसे आये बच्चे' पुस्तक की लेखिका अंजली वर्मा के अनुसार जो बार-बार असफल होने पर भी अपने प्रयत्न नहीं छोड़ते और उत्साह में कमी नहीं आने देते, उन्हें सफलता जरूर मिल जाती है। महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टीन के अध्यापक उनसे कहते थे कि वे सात जन्म में भी गणित में सफल नहीं हो सकते, लेकिन लगातार असफलताओं का सामना करते हुए विद्याध्यन में लगे रहे। उसी का फल है कि वे सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक बने।

अपनी कमजोरियों को पहचानना सबसे बड़ी बात होती है, उसे सुधारना और भी बड़ी बात होती है।

कवि सोहन लाल द्विवेदी ने सत्य ही लिखा है -

असफलता एक चुनौती है ..... स्वीकार करो .....
क्या कमी रह गयी, देखो और सुधार करो .....
जब तक ना सफल हो नींद-चैन को त्यागों तुम .....
संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागो तुम .....
कुछ किये बिना ही जयजयकार नहीं होती .....
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती .....

हितोपदेश के इस कथन को याद रखें -

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।

अर्थात् परिश्रम से ही कार्य सिद्ध होते हैं केवल मन में सोचने मात्र से नहीं। अतः उत्साह के साथ सबके कल्याण में लग जाइये।

कैसे तेरा भार उतारूँ ?

(आतंकवादी हमलों में मारे गए निरीह मासूमों के लिए एक श्रद्धांजलि!)

दुर्गा दत्त पाठक, प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय, इफको फूलपुर, प्रयागराज

मन आतंकित, तन आतंकित
धरती का कण-कण आतंकित
मुझे बता धरती माता तू
कैसे तेरा भार उतारूँ?

रोते स्वप्न काँपते शव हैं
काले पड़ते विश्व-विभव हैं
कृष्णपक्ष मंडित होता है
शुक्ल का होता रक्त विरंजित

जन आतंकित, धन आतंकित
खुशबू भरा चमन आतंकित
मुझे बता धरती माता तू
कैसे तेरा भार उतारूँ?

घटती है महिमा समुद्र की
नदियाँ हैं होती उच्छृंखल
कल-कल ध्वनि गर्जन-सी लगती
दीप हवा से बुझते पल-पल

वन आतंकित, धन आतंकित
कुटिया और भवन आतंकित
मुझे बता धरती माता तू
कैसे तेरा भार उतारूँ?

जिस पग में है फटी बिवाई
उस के नीचे दबी भावना
प्रेम ने छोड़ा मर्यादा को
अनियंत्रित हो गयी कामना

रण आतंकित, क्षण आतंकित
झुकता शीश नमन आतंकित
मुझे बता धरती माता तू -
कैसे तेरा भार उतारूँ?

राजभाषा हिंदी की वर्तमान परिस्थिति

प्रवीण श्रीवास्तव, हिंदी अधिकारी
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

भारत को संविधान के भाग 17 राजभाषा अध्याय एक संघ की राजभाषा के अंतर्गत अनुच्छेद 343 के खंड (1) में राजभाषा हिंदी के विषय में उपबंध का उल्लेख किया गया है, तथा भारत का संविधान के अनुच्छेद 343 के खंड (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, राजभाषा अधिनियम, 1963 (समय-समय पर यथा संशोधित) को प्रख्यापित किया गया है, साथ ही राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजन के लिए प्रयोग) नियम, 1976 (समय पर यथा संशोधित) को प्रख्यापित किया गया है। इसके अतिरिक्त हिंदी संविधान के आठवीं अनुसूची की भाषाओं में भी शामिल हैं और भारत के बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड राज्यों की राजभाषा हिंदी ही है, परंतु यह खेद का विषय है कि अंग्रेजी का वर्चस्व दिन प्रतिदिन हिंदी भाषी प्रदेशों सहित संपूर्ण भारत में शासकीय कार्य के निष्पादन में बढ़ता ही जा रहा है। हिंदी को बोलचाल की भाषा तक ही सीमित कर दिया गया है। आज भी भारत का संसद् सहित संघ के समस्त केन्द्रीय कार्यालय, भारत के सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालय, भारत के प्रमुख केंद्रीय संस्थानों/एजेंसियों में अंग्रेजी भाषा का ही वर्चस्व है। वर्ष 1975 में गृह मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा विभाग की स्थापना हुई। कानून अधिनियमित कर दिए गए, समय-समय पर अधीनस्थ विधायन अधिनियमित कर दिया गया, विभाग बन गया परंतु हिंदी को संपूर्ण भारत में राजभाषा के रूप में आजतक स्थापित नहीं किया जा सका और संविधान के अनुच्छेद 343 के खंड (2) निहित उपबंध के अधीन शासकीय प्रयोजन के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग जो मात्र संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष के लिए किया गया था, यह अनवरत रूप से आज भी लागू है। हिंदी हमारी न सिर्फ भाषा है, बल्कि हमारी संस्कृति है, हमारी भावना है, हमारा स्वाभिमान हैं, जब तक पूर्ण मनोयोग से हिंदी को हम भारत के लोग अपने हृदय में अपने मस्तिष्क में स्थान नहीं देंगे तब तक हिंदी भारत की राजभाषा नहीं बन सकती। इसके लिए यह आवश्यक है कि भारतीय समाज में जन मानस में प्रचलित सरल शब्दों को अंगीकृत किया जाए। जब तक शासकीय भाषा का सरलीकरण, न्यायालय की भाषा का सरलीकरण तकनीकी भाषा का सरलीकरण, विद्यमान परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए नए शब्दों का निर्माण नहीं किया जाता तब तक यह संभव नहीं।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति हिन्दी तिमाही बैठक
दिनांक 29-12-2023 के छायाचित्र

राजभाषा कार्यान्वयन समिति हिन्दी तिमाही बैठक
दिनांक 23-03-2024 के छायाचित्र

तकनीक और राजभाषा

हरिओम कुमार, हिंदी अनुवादक
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

इक्कीसवीं सदी में राजभाषा के रूप में हिंदी और तकनीक का रिश्ता मजबूत हुआ है। हिंदी जब से तकनीक से जुड़ी है, उसकी उपयोगिता और महत्ता पहले से और भी ज्यादा बढ़ गई है। तकनीक आधारित हिंदी का प्रयोग पारंपरिक रूप से कार्य करने वाले लोगों के लिए एक चुनौती तो है, लेकिन यह रास्ता हिंदी के बुनियाद को और भी सुदृढ़ करती है।

दरअसल, तकनीक आधारित जिस तरह की दुनिया का निर्माण हो रहा है, उसमें समाज के विभिन्न उपादान भी तकनीकी उपक्रमों से तेजी से जुड़ते चले आ रहे हैं। सामाजिक संरचना में प्रशासनिक आयाम के विविध उपक्रमों में ई-शासन ने अपनी बड़ी भूमिका निभाई है। ई-शासन समय की जरूरत है। ऐसा नहीं है कि ई-शासन कोई अचानक से प्रकट हुई बात या पहल है। भारत में ई-गवर्नेंस की शुरुआत 1970 के दशक के दौरान चुनाव, जनगणना, कर प्रशासन आदि से संबंधित डेटा गहन कार्यों के प्रबंधन के लिये हो चुकी थी। 1970 में ही इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग की स्थापना हुई। जिसे भारत में ई-गवर्नेंस की दिशा में पहला बड़ा कदम माना गया था, क्योंकि इसमें 'सूचना' और 'संचार' को केंद्र में रख गया। ठीक सात साल बाद 1977 में स्थापित राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एनआईसी) ने देश के सभी ज़िला कार्यालयों को कंप्यूटरीकृत करने के लिए 'जिला सूचना प्रणाली कार्यक्रम' शुरू किया। ई-गवर्नेंस को बढ़ावा देने की दिशा में 1987 में लाँच **NICNET** (राष्ट्रीय उपग्रह-आधारित कंप्यूटर नेटवर्क) एक प्रभावी और महत्त्वपूर्ण कदम था। इन सबका समेकित असर यह हुआ कि इनफॉर्मेशन, कम्युनिकेशन और टेक्नोलॉजी के साझेपन (आई.सी.टी.) को तेजी से प्रयोग मे लाया जाने लगा। हालांकि, तब ई-शासन में अंग्रेजी का बोलबाला था।

यहां यह ध्यान देने वाली बात है कि हिंदी पट्टी में समावेशी शासन व्यवस्था को त्वरित और युक्तिसंगत ढंग से निष्पादित करने में ई-शासन का माध्यम अंग्रेजी रखने से प्रशासनिक सुलभता न केवल दुरूह बनी रहेगी बल्कि उसकी पहुंच भी कम होगी। ई-शासन की कार्यवाहियां समुचित ढंग से निष्पादित हो सकें, इसके लिए ई-शासन को हिंदी से जोड़कर उसे प्रभावी रूप से प्रस्तुत करने एवं हिंदी संबंधी व्यावहारिक चुनौतियों से आसानी से निपटने के लिए हमें समुचित कदम उठाना होगा!

न.रा.का.स. (कार्या.-2) स्तर पर किए गय राजभाषा संबंधी कार्यों का संक्षिप्त विवरण :-

ज्ञातव्य है कि यह संस्थान न.रा.का.स. (कार्या.-2), प्रयागराज का अध्यक्ष कार्यालय भी है। इस समिति में कुल 35 सदस्य कार्यालय हैं। वर्ष के दौरान नराकास स्तर पर किए गए उल्लेखनीय कार्य निम्नवत हैं :-

1. वर्ष के दौरान न.रा.का.स. (कार्या.-2) की दोनों छमाही बैठकें निर्धारित कलेण्डर माह अर्थात् अप्रैल/सितम्बर में क्रमशः दिनांक 25.04.2023 एवं 26.09.2023 को निदेशक महोदय की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठकों में सदस्य कार्यालयों के ज्यादातर प्रशासनिक प्रधान उपस्थित हुए।

2. उपरोक्त दोनों बैठकों में सभी 35 सदस्य कार्यालयों से प्राप्त छमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा की गई। बैठक का कार्यवृत्त निर्धारित समयान्तर्गत सभी सदस्य कार्यालयों को प्रेषित किया गया तथा राजभाषा विभाग के न.रा.का.स. पोर्टल पर भी बैठकों का कार्यवृत्त, उपस्थित-पत्रक एवं हस्ताक्षरित कार्यसूची अपलोड की गई।

3. उल्लेखनीय तथ्य यह है कि समिति के सभी 35 सदस्य कार्यालय राजभाषा विभाग के सूचना प्रबंधन प्रणाली में पजींकृत हैं तथा प्रत्येक छमाही की राजभाषा प्रगति रिपोर्ट प्रमाण-पत्र सहित अपलोड कर रहे हैं। इसके लिए न.रा.का.स. सचिवालय से उन्हें समय-समय पर अपेक्षित सहयोग भी दिया जाता है।

4. न.रा.का.स. (कार्या.-2), प्रयागराज की गृह पत्रिका त्रिवेणी प्रवाह के प्रवेशांक का विमोचन दिनांक 29.09.2022 को आयोजित न.रा.का.स. की छमाही बैठक में किया गया तथा पत्रिका की साफ्टकापी (पी.डी.एफ.) आनलाइन माध्यम से सभी सदस्य कार्यालयों को प्रेषित की गई। त्रिवेणी प्रवाह के द्वितीय अंक 2023 को राजभाषा विभाग के ई-पत्रिका पुस्तकालय पर भी अपलोड किया गया।

5. इसके अतिरिक्त न.रा.का.स. (कार्या.-2) के सभी सदस्य कार्यालयों में प्रत्येक तिमाही में हिंदी बैठक के आयोजन, धारा 3(3) एवं नियम 5 के अनुपालन के प्रति भी जागरूकता पैदा की गई एवं उन्हें राजभाषा संबंधी किसी भी समस्या के समाधान के लिए अपेक्षित सहयोग प्रदान किया गया।

6. माननीय संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप-समिति ने दिनांक 03-04 जनवरी, 2023 को संस्थान सहित नराकास (कार्या.-2) प्रयागराज के कई कार्यालयों में संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी के प्रयोग में की गई प्रगति का पुनर्विलोकन किया तथा उक्त कार्यालयों में हिंदी की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। माननीय संसदीय राजभाषा समिति ने राजभाषा कार्यान्वयन में गति लाने के लिए बहुमूल्य सुझाव भी दिए। संस्थान स्वयं सहित सभी कार्यालय में दिए गए सुझावों को अमल में लाने के लिए कटिबद्ध हैं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज कार्यालय-02 की छमाही बैठक दिनांक 01 जनवरी 2023 से 30 जून 2023 तक की अवधि के आंकड़े

क्र. सं.	कार्यालय	धारा 3(3) के अधीन जारी कागजात			हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर			अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर			मूल पत्राचार 'क' क्षेत्र को भेजे गए पत्र			फाइलों पर टिप्पणी (पृष्ठों की संख्या)			हिंदी कार्यशाला		तिमाही बैठक की तिथि		ऑनलाइन तिमाही रिपोर्ट	
		कुल सं.	द्विभाषी	अंग्रेजी	प्राप्त पत्र	हिंदी में उत्तर	अंग्रेजी में उत्तर	प्राप्त पत्र	हिंदी में उत्तर	अंग्रेजी में उत्तर	कुल सं.	हिंदी में	हिंदी का %	कुल सं.	हिंदी में	हिंदी का %	संख्या	कार्मिक	पहली तिमाही	दूसरी तिमाही	कार्यालय का कोड	हाँ/नहीं
1	मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद	5	5	-	10182	2428	-	9288	1867	681	15876	14285	89.98	5244	3886	74.10	2	144	21.03.23	20.06.23	ofup8718	हाँ
2	भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद	38	38	-	51	44	-	68	37	26	104	86	82.69	30	20	66.67	2	51	29.03.23	28.06.23	ofup3896	हाँ
3	हरीशचन्द्र अनुसंधान संस्थान	265	265	-	58	14	-	18	1	2	1029	968	94.07	438	407	92.92	1	15	18.01.23	09.05.23	ofup1421	हाँ
4	राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत	59	59	-	30	17	-	527	21	-	3627	3496	96.39	517	517	100.00	-	-	17.03.23	30.06.23	ofup4731	हाँ
5	इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज	372	372	-	1953	1665	-	2380	1700	592	3709	2746	74.04	2378	1650	69.39	1	10	07.04.23	23.06.23	bdup3101	हाँ
6	केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय	-	-	-	193	112	-	100	62	4	286	265	92.66	201	180	89.55	2	15	30.03.23	26.06.23	ofup9201	हाँ
7	क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, भारतीय लेखापरीक्षा एवं	6	6	-	185	68	-	143	28	-	275	275	100.00	527	527	100.00	2	17	17.04.23	14.07.23	ofup6284	हाँ
8	राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान (महिला)	38	38	-	458	136	-	205	61	56	421	294	69.83	112	20	17.86	1	10	22.02.23	22.05.23	ofup4761	हाँ
9	दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड	10	10	-	183	10	-	393	50	20	70	55	78.57	300	300	100.00	2	6	23.03.23	27.06.23	ofup4843	हाँ
10	राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान	1	1	-	434	145	-	795	60	151	1646	1154	70.11	461	358	77.66	2	6	21.03.23	23.06.23	ofup5944	हाँ
11	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	290	290	-	6149	5589	-	8892	5502	-	10175	9466	93.03	4040	3647	90.27	-	-	18.04.23	13.06.23	ofup4795	हाँ
12	जवाहर नवोदय विद्यालय	37	37	-	149	121	-	80	63	-	279	279	100.00	372	294	79.03	2	32	04.01.23	25.04.23	ofup5038	हाँ
13	केन्द्रीय विद्यालय आई. आई. आई. टी., झलवा	82	82	-	44	34	-	45	35	1	92	90	97.83	57	57	100.00	1	27	31.03.23	26.06.23	ofup6446	हाँ
14	केन्द्रीय विद्यालय नैनी	52	52	-	420	344	-	170	126	-	220	220	100.00	52	52	100.00	2	29	31.03.23	30.06.23	ofup7604	हाँ
15	केन्द्रीय विद्यालय मनौरी	23	23	-	117	117	-	289	127	-	113	113	100.00	71	71	100.00	2	69	31.03.23	26.06.23	ofup1075	हाँ
16	केन्द्रीय विद्यालय ओल्ड कैंट, तेलियरगंज	69	69	-	84	47	-	87	46	-	71	71	100.00	97	97	100.00	-	-	15.03.23	23.06.23	ofup4588	हाँ
17	केन्द्रीय विद्यालय सीओडी छिवकी	9	9	-	94	55	-	39	19	3	81	80	98.77	123	102	82.93	-	-	25.03.23	22.06.23	ofup7601	हाँ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज कार्यालय-02 की छमाही बैठक दिनांक 01 जनवरी 2023 से 30 जून 2023 तक की अवधि के आंकड़े

क्र. सं.	कार्यालय	धारा 3(3) के अधीन जारी कागजात			हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर			अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर			मूल पत्राचार 'क' क्षेत्र को भेजे गए पत्र			फाइलों पर टिप्पणी (पृष्ठों की संख्या)			हिंदी कार्यशाला		तिमाही बैठक की तिथि		ऑनलाइन तिमाही रिपोर्ट	
		कुल सं.	द्विभाषी	अंग्रेजी	प्राप्त पत्र	हिंदी में उत्तर	अंग्रेजी में उत्तर	प्राप्त पत्र	हिंदी में उत्तर	अंग्रेजी में उत्तर	कुल सं.	हिंदी में	हिंदी का %	कुल सं.	हिंदी में	हिंदी का %	संख्या	कार्मिक	पहली तिमाही	दूसरी तिमाही	कार्यालय का कोड	हाँ/नहीं
18	केन्द्रीय विद्यालय सीआरपीएफ, फाफामऊ	14	14	-	135	114	-	83	38	-	126	126	100.00	218	204	93.58	-	-	18.03.23	23.06.23	ofup7746	हाँ
19	केन्द्रीय विद्यालय एयर फोर्स स्टेशन, बमरौली	32	32	-	835	428	-	82	51	-	362	362	100.00	116	116	100.00	2	51	31.03.23	30.06.23	ofup8566	हाँ
20	केन्द्रीय विद्यालय न्यू कैंट (प्रथम पाली)	30	30	-	46	38	-	10	3	-	101	101	100.00	245	245	100.00	-	-	29.03.23	30.06.23	ofup1087	हाँ
21	केन्द्रीय विद्यालय न्यू कैंट (द्वितीय पाली)	3	3	-	22	20	-	8	3	-	244	227	93.03	12	12	100.00	2	52	30.03.23	30.06.23	ofup1088	हाँ
22	केन्द्रीय विद्यालय इफको फूलपुर	4	4	-	160	64	-	156	30	-	80	80	100.00	4	4	100.00	-	-	29.03.23	30.06.23	ofup7632	हाँ
23	उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र	60	60	-	591	367	-	739	69	53	662	523	79.00	415	415	100.00	1	11	28.03.23	06.06.23	ofup8755	हाँ
24	इलाहाबाद संग्रहालय	15	15	-	330	272	-	134	62	28	369	302	81.84	289	262	90.66	-	-	25.04.23	-	ofup8882	हाँ
25	कर्मचारी चयन आयोग (मध्य क्षेत्र)	33	33	-	1732	1574	-	540	420	38	8399	8290	98.70	925	879	95.03	1	21	22.06.23	-	ofup5178	हाँ
26	केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना	25	25	-	125	75	-	4820	152	4668	2730	1650	60.44	380	79	20.79	1	19	17.04.23	-	ofup7722	हाँ
27	दूरदर्शन केन्द्र	8	8	-	12	4	-	20	5	-	173	119	68.79	152	128	84.21	1	16	23.02.23	08.06.23	ofup4754	हाँ
28	आकाशवाणी, इलाहाबाद	13	13	-	96	56	-	235	138	37	645	625	96.90	202	187	92.57	2	57	17.03.23	23.06.23	ofup5016	हाँ
29	भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण मध्य क्षेत्रीय केन्द्र	12	12	-	81	25	-	9	3	-	209	206	98.56	19	19	100.00	1	23	29.03.23	23.06.23	ofup4732	हाँ
30	भारतीय भू-चुम्बकत्व संस्थान	11	11	-	32	19	-	12	-	-	182	91	50.00	143	68	47.55	1	9	27.03.23	27.06.23	ofup1030	हाँ
31	पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र	15	15	-	182	93	-	321	176	12	248	248	100.00	327	327	100.00	-	-	-	27.06.23	ofup9203	हाँ
32	राज्य एकक कार्यालय, केंद्रीय भूमि जल बोर्ड	21	21	-	93	61	-	295	40	124	371	215	57.95	233	93	39.91	1	14	15.03.23	-	ofup8077	हाँ
33	सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान	-	-	-	328	312	-	2230	1275	-	195	179	91.79	541	438	80.96	2	14	24.03.23	26.06.23	ofup7539	हाँ
34	केंदीय संचार ब्यूरो	-	-	-	104	20	-	2	-	-	163	153	93.87	-	-	-	-	-	27.03.23	26.06.23	ofup5043	हाँ
35	प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा	30	30	-	3100	3100	-	502	284	45	5803	5717	98.52	1399	1360	97.21	2	42	30.01.23	27.04.23	ofup8140	हाँ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज कार्यालय-02 की छमाही बैठक दिनांक 01 जनवरी 2023 से 30 जून 2023 तक की अवधि के आंकड़े

क्र. सं.	कार्यालय	अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान				अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिंदी में काम का प्रतिशत				आशुलिपिक से संबंधित विरण			टंकण /टाइपिस्ट से संबंधित विवरण			कम्प्यूटर/लैपटाप का विवरण			हिंदी में कंप्यूटर प्रशिक्षण			अधिनियम/नियम/ कार्यालयीन कोड/ मैनुअल आदि		
		कुल सं.	प्रवीणता प्राप्त	कार्यसाधक ज्ञान	प्रशिक्षण के लिए शेष	कुल सं.	50% तक	51% से 75% तक	75% से अधिक	कुल सं.	हिंदी में प्रशिक्षित	प्रशिक्षण के लिए शेष	कुल सं.	हिंदी में प्रशिक्षित	प्रशिक्षण के लिए शेष	कुल सं.	द्विभाषी	केवल अंग्रेजी में	कुल सं.	हिंदी में प्रशिक्षित	हिंदी में काम करने वाले	कुल सं.	द्विभाषी	केवल अंग्रेजी में
1	मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान	340	289	51	-	340	23	91	226	2	2	-	43	43	-	1398	1398	-	340	45	340	3	3	-
2	भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद	72	72	-	-	70	-	-	70	2	2	-	-	-	-	2350	2350	-	72	-	72	5	5	-
3	हरीशचन्द्र अनुसंधान संस्थान	56	26	30	-	55	31	17	7	-	-	-	6	6	-	280	280	-	56	56	20	30	30	-
4	राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत	15	15	-	-	5	-	-	5	-	-	-	4	-	-	28	28	-	-	-	-	1	1	-
5	इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज	359	359	0	0	359	-	100	259	10	10	-	187	187	-	1820	1820	-	359	2	359	4	4	-
6	केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय	25	25	-	-	25	-	-	25	-	-	-	3	3	-	84	84	-	25	25	25	-	-	-
7	क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग	20	18	2	-	18	-	-	19	-	-	-	3	1	2	109	109	-	20	-	20	-	-	-
8	राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान (महिला)	18	16	2	-	18	4	4	6	1	-	1	-	-	-	5	5	-	18	3	3	-	-	-
9	दत्तोपंत ठेगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड	6	6	-	-	6	-	-	6	1	1	-	3	3	-	5	5	-	6	6	6	21	21	-
10	राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान	6	4	2	-	6	-	4	2	-	-	-	4	3	1	11	11	-	6	3	3	-	-	-
11	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	33	33	-	-	33	-	-	33	3	3	-	21	16	5	64	64	-	-	-	-	-	-	-
12	जवाहर नवोदय विद्यालय	32	32	-	-	32	2	8	22	-	-	-	-	-	-	45	45	-	32	2	30	2	2	-
13	केन्द्रीय विद्यालय आई. आई. आई. टी., झलवा	27	27	-	-	27	-	-	27	-	-	-	2	2	-	34	34	-	-	-	-	-	-	-
14	केन्द्रीय विद्यालय नैनी	29	29	-	-	29	-	-	29	-	-	-	-	-	-	45	45	-	29	25	25	25	25	-
15	केन्द्रीय विद्यालय मनौरी	69	49	20	-	69	-	-	69	-	-	-	-	-	-	92	92	-	69	69	69	5	5	-
16	केन्द्रीय विद्यालय ओल्ड कैंट, तेलियरगंज	66	66	-	-	66	-	-	66	-	-	-	4	4	-	7	7	-	-	-	-	4	4	-
17	केन्द्रीय विद्यालय सीओडी छिवकी	29	28	1	-	29	-	-	-	-	-	-	2	2	-	26	26	-	-	-	-	-	-	-

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रयागराज कार्यालय-02 की छमाही बैठक दिनांक 01 जनवरी 2023 से 30 जून 2023 तक की अवधि के आंकड़े

क्र. सं.	कार्यालय	अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान				अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिंदी में काम का प्रतिशत				आशुलिपिक से संबंधित विररण			टंकण /टाइपिस्ट से संबंधित विवरण			कम्प्यूटर/लैपटाप का विवरण			हिंदी में कंप्यूटर प्रशिक्षण			अधिनियम/नियम/ कार्यालयीन कोड/ मैनुअल आदि		
		कुल सं.	प्रवीणता प्राप्त	कार्यसाधक ज्ञान	प्रशिक्षण के लिए शेष	कुल सं.	50% तक	51% से 75% तक	75% से अधिक	कुल सं.	हिंदी में प्रशिक्षित	प्रशिक्षण के लिए शेष	कुल सं.	हिंदी में प्रशिक्षित	प्रशिक्षण के लिए शेष	कुल सं.	द्विभाषी	केवल अंग्रेजी में	कुल सं.	हिंदी में प्रशिक्षित	हिंदी में काम करने वाले	कुल सं.	द्विभाषी	केवल अंग्रेजी में
18	केन्द्रीय विद्यालय सीआरपीएफ, फाफामऊ	30	30	-	-	30	-	5	25	-	-	-	2	2	-	65	65	-	30	16	16	2	2	-
19	केन्द्रीय विद्यालय एयर फोर्स स्टेशन, बमरौली	51	51	-	-	51	-	-	51	-	-	-	3	3	-	80	80	-	51	51	51	22	22	-
20	केन्द्रीय विद्यालय न्यू कैंट (प्रथम पाली)	71	69	2	-	71	-	-	71	-	-	-	4	4	-	231	231	-	71	5	5	2	2	-
21	केन्द्रीय विद्यालय न्यू कैंट (द्वितीय पाली)	52	52	-	-	52	-	-	52	-	-	-	2	2	-	231	231	-	52	52	52	2	2	-
22	केन्द्रीय विद्यालय इफको फूलपुर	41	39	2	-	41	-	-	41	-	-	-	2	2	-	71	71	-	3	3	3	36	36	-
23	उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र	14	14	-	-	14	-	-	14	-	-	-	3	3	-	16	16	-	14	10	10	2	2	-
24	इलाहाबाद संग्रहालय	37	31	6	-	37	-	-	-	1	1	-	2	2	-	20	20	-	37	3	3	2	2	-
25	कर्मचारी चयन आयोग (मध्य क्षेत्र)	32	29	3	-	32	-	-	32	2	2	-	7	7	-	32	32	-	32	8	20	-	-	-
26	केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना	96	90	6	-	96	6	90	-	1	1	1	12	12	-	17	17	-	-	-	-	-	-	-
27	दूरदर्शन केन्द्र	26	26	-	-	26	-	-	-	1	1	-	2	2	-	11	11	-	26	16	3	-	-	-
28	आकाशवाणी, इलाहाबाद	65	65	-	-	65	-	-	65	3	3	-	8	8	-	27	27	-	-	-	-	-	-	-
29	भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण मध्य क्षेत्रीय केन्द्र	23	21	-	2	23	1	-	21	-	-	-	2	2	-	12	12	-	23	14	14	2	2	-
30	भारतीय भू-चुम्बकत्व संस्थान	13	11	2	-	13	5	6	1	1	-	1	-	-	-	22	12	-	13	10	5	-	-	-
31	पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र	11	11	-	-	8	-	-	8	-	-	-	2	2	-	15	15	-	-	-	-	-	-	-
32	राज्य एकक कार्यालय, केंद्रीय भूमि जल बोर्ड	15	10	5	15	15	-	15	-	-	-	-	-	-	-	10	6	-	15	-	4	-	-	-
33	सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान	17	17	-	-	17	-	-	17	3	3	-	6	6	-	18	18	-	19	17	17	-	-	-
34	केंदीय संचार ब्यूरो	5	3	2	-	5	2	-	3	-	-	-	2	2	-	2	2	-	5	3	3	-	-	-
35	प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा	109	109	109	-	109	-	-	109	1	-	1	1	-	1	175	175	-	109	1	109	27	27	-

नराकास प्रयागराज (कार्यालय-2) के सदस्य कार्यालयों की सूची

क्र.सं.	कार्यालय कोड एवं कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख का नाम व पदनाम	कार्यालय का पता	कार्यालय का दूरभाष/मोबाइल	ईमेल
1.	[ofup8718] मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद	प्रो. रमा शंकर वर्मा निदेशक	तेलियरगंज, प्रयागराज-211004	05322271011, 6306952662	registrar@mnnit.ac.in
2.	[ofup3896] भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान	प्रो. मुकुल शरद सुतावने निदेशक	देवघाट, झलवा, प्रयागराज-211015	05322922222, 9415217300	registrar@iiita.ac.in
3.	[ofup1421] हरीशचन्द्र अनुसंधान संस्थान	प्रो. पिनाकी मजूमदार निदेशक	छतनाग रोड, झूंसी, प्रयागराज - 211019	0532274341, 9919563339	registrar@hri.res.in
4.	[ofup4731] राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी	डॉ. नीरज कुमार अधिशासी सचिव	5 लाजपत राय मार्ग, प्रयागराज - 211002	05322640224, 9415306124	nasi.allhabad1@gmail.com
5.	[bdup3101] इलाहाबाद विश्वविद्यालय	प्रो. नरेंद्र कुमार शुक्ल कुलसचिव	इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज-211002	05322462242,9838916401	registrarau409@gmail.com
6.	[ofup9201] केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय	श्री ललित कुमार त्रिपाठी निदेशक	चन्द्र शेखर आजाद पार्क, प्रयागराज - 211001	05322460957, 8528319951	director-prayagraj@csu.co.in
7.	[ofup6284] क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान	श्री राम हित महानिदेशक	20 सरोजिनी नायडू मार्ग, प्रयागराज-211001	05322431364, 9140693607	rtiallahabad@cag.gov.in
8.	[ofup4761] राष्ट्रीय कौशल प्रशि. सं. महिला	शुश्री प्रियंका कौल सहायक निदेशक/प्राचार्य	6 नया कटरा रोड, प्रयागराज-211002	05322971803, 9632416015	rvtiw_ald@yahoo.com
9.	[ofup4843] दत्तोपंत ठेंगड़ी रा. श्रमिक शिक्षा व वि. बो.	श्री उत्तम सिंह क्षेत्रीय निदेशक	106 डॉ. सूर मार्ग, टैगोर टाउन, प्रयागराज-211002	05322468610,9424755779	rd-allahabad@cbwc.nic.in
10.	[ofup5944] रा.मुक्त वि. शिक्षा सं.	डॉ. पियूष प्रसाद क्षेत्रीय निदेशक	19-17 कस्तूरबा गांधी मार्ग, प्रयागराज-211002	05322548154, 8638092026	rdallahabad@nios.ac.in
11.	[bdup4795] केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	श्री ललित कुमार कपिल क्षेत्रीय अधिकारी	35-बी एम.जी. मार्ग, सिविल लाइंस, प्रयागराज-211001	05322407970, 7625821163	roallahabadcbse@nic.in
12.	[ofup5038] जवाहर नवोदय विद्यालय	श्रीमती सुधा सेठी प्राचार्य	मेजाखास, प्रयागराज-212302	8809566297. 8840785039	jnvallahabad2012@gmail.com
13.	[bdup6446] केंद्रीय विद्यालय, आईआईआईटी	श्री बृज नन्दन पाण्डेय प्राचार्य	आईआईआईटी, झलवा, प्रयागराज-211012	05322552335, 6393041850	kviiit.allahabad@gmail.com
14.	[ofup7604] केंद्रीय विद्यालय नैनी	मो. शमशुद दुहा प्राचार्य	नैनी, प्रयागराज - 211010	05322687814, 9140318353	kvnainiprincipal@gmail.com
15.	[ofup9200] केंद्रीय विद्यालय मनौरी	श्री मनीष कुमार त्रिपाठी प्राचार्य	एएफ़एस, मनौरी, प्रयागराज-212212	05322702565,9971448105	kvmald@gmail.com
16.	[ofup4588] केंद्रीय विद्य. ओल्ड कैंट	श्री राजीव कुमार तिवारी प्राचार्य	ओल्डकैंट, तेलियरगंज, प्रयागराज-211004	05322251722, 8887623431	kvoldcantt@gmail.com
17.	[ofup7601] केंद्रीय विद्यालय सीओडी	श्री विनय कुमार त्रिपाठी प्राचार्य	सीओडी छिवकी प्रयागराज-212105	05322696007, 9451060398	kvchheoki@gmail.com

क्र.सं.	कार्यालय कोड एवं कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख का नाम व पदनाम	कार्यालय का पता	कार्यालय का दूरभाष/मोबाइल	ईमेल
18.	[ofup7746] केंद्रीय विद्यालय सीआरपीएफ़	श्री गोविंद दुबे प्राचार्य	सीआरपीएफ़, फाफामऊ, प्रयागराज-211022	05335211671, 7839167067	kvcrpfalld@gmail.com
19.	[ofup6430] केंद्रीय विद्यालय ए.एफ.एस	डॉ. अनूप शुक्ला प्राचार्य	एएफ़एस, बमरौली, प्रयागराज-211012	05322580425, 9827816491	kvbald@gmail.com
20.	[ofup4735] केंद्रीय विद्यालय न्यूकैंट, प्रथम पाली	श्रीमती सुचित्रा प्राचार्य	न्यू कैंट, प्रयागराज-211001	05322622058, 9452694262	kvnewcanttald@gmail.com
21.	[ofup1088] केंद्रीय विद्यालय न्यूकैंट द्वितीय पाली	श्रीमती सुचित्रा प्राचार्य	वी डी रोड, तोप खाना, बाजार, प्रयागराज	05322622058, 9452694262	kvnc2shift2@gmail.com
22.	[ofup7632] केंद्रीय विद्यालय इफको	श्री दुर्गा दत्त पाठक प्राचार्य	इफको, फूलपुर, प्रयागराज- 212404	05322975282, 8812033993	kviffcophulpur@gmail.com
23.	[ofup8755] उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र	श्री सुरेश शर्मा निदेशक	14 सी.एस.पी. सिंह मार्ग, प्रयागराज-211001	7525017432, 7607001532	nczcc@rediffmail.com
24.	[ofup8882] इलाहाबाद संग्रहालय	श्री राजेश प्रसाद निदेशक	चन्द्र शेखर आजाद पार्क, प्रयागराज-211001	05322408237, 9335089896	allahabadmuseum@rediffmail.com
25.	[ofup5178] कर्मचारी चयन आयोग मध्य प्रदेश	श्री राहुल कुमार सचान क्षेत्रीय निदेशक	केंद्रीय सदन, 35 ए एम जी मार्ग, प्रयागराज-211001	05322970491, 9415922999	ssccr.rd@gmail.com
26.	[ofup7722] केंद्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना	डॉ. ऋतु अग्रवाल अपर निदेशक	दूसरा तल, संगम प्लेस, प्रयागराज-211001	05322561310, 9415351884	ad.al@cghs.nic.in
27.	[ofup4754] दूरदर्शन केंद्र	श्री अभिषेक तिवारी सहायक निदेशक (का.)/कार्यक्रम प्रमुख	लाजपत राय मार्ग, ममफोर्डगंज, प्रयागराज-211002	05322441365, 8004915651	sehptvalld@rediffmail.com
28.	[ofup5016] आकाशवाणी	श्री देवेश कुमार श्रीवास्तव निदेशक (अभियांत्रिकी)	7-9 दयानन्द मार्ग, प्रयागराज-211001	05322423338, 9415800159	allahabad@prasarbharati.gov.in
29.	[ofup4732] भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण मध्य क्षेत्र	डॉ. विनय रंजन वैज्ञानिक-ई एवं कार्यालयाध्यक्ष	10 चैथम लाइन, प्रयागराज- 211002	05322250179, 9830289770	vinayranjan@bsi.gov.in
30.	[ofup1032] भारतीय भू-चुम्बकत्व संस्थान	डॉ. राजेश सिंह प्रशासनिक प्रभारी	कनिहार, झूंसी, प्रयागराज- 211019	9869801031, 9621932157	lig.kskgrl@iigm.res.in
31.	[ofup9203] पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र	डॉ. संजय सिंह वैज्ञानिक-जी	3-1 लाजपत राय रोड, नया कटरा, प्रयागराज-211002	05322440795, 9430366286	dir_csfer@icfre.org
32.	[ofup8077] केंद्रीय भू-जल बोर्ड	शुश्री नसीमाजमाल वैज्ञानिक-डी	276 चकिया, राजरूपपुर प्रयागराज-211016	05322617597, 9614795660	oicallahabad-cgwb@nic.in
33.	[ofup7539] सूक्ष्म लघु मध्यम उद्यम विकास संस्थान	श्री एल.बी.एस. यादव संयुक्त निदेशक	ई-17 व 18 उद्योग नगर, नैनी, प्रयागराज-211010	9369638169, 9467902950	dcdi-allbad@dcmsme.gov.in
34.	[ofup5043] केंद्रीय संचार ब्यूरो	डॉ. लाल जी क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी	28 ए-1, स्टैनली रोड, प्रयागराज-211001	05322266384, 9839073864	dfpah.up@nic.in, allahabaddfp@gmail.com
35.	[ofup8140] प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा	श्री राम हिंत प्रधान निदेशक	महाप्रबंधक कार्यालय परिसर सूबेदारगंज, प्रयागराज-211015	05322225901, 9695408627	pdarlyncr@cag.gov.in

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत अनिवार्य रूप से द्विभाषी में निर्गत किए जाने वाले कागज़ात

1.	सामान्य आदेश	General Orders
2.	संकल्प	Resolution
3.	परिपत्र	Circulars
4.	नियम	Rules
5.	प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन	Administrative or other reports
6.	प्रेस विज्ञप्तियां	Press Release / Communiques
7.	संविदाएं	Contracts
8.	करार	Agreements
9.	अनुज्ञप्तियां	Licences
10.	निविदा प्रारुप	Tender Forms
11.	अनुज्ञा पत्र	Permits
12.	निविदा सूचनाएं	Tender Notices
13.	अधिसूचनाएं	Notifications
14.	संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज पत्र।	Reports and documents to be laid before the Parliament

हिंदी पखवाड़ा-2023 में पं. राम नरेश तिवारी, पिण्डीवासा को सम्मानित करते हुए

हिंदी पखवाड़ा-2023 में पं. राम नरेश तिवारी, पिण्डीवासा महोदय का उद्बोधन

मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद
प्रयागराज-211004
Website : www.mnnit.ac.in